दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

नवंबर–दिसंबर 2022

डेरी किसानों को आर्थिक अनुदान: कल्याणकारी या अहितकर?

भारत में डेरी सहकारिता का विकास और माहिलाओं का सशक्तिकरण

बकरी पालन से अधिक कमाई

www.indairyasso.org

DeLaval

LactiFence™

मस्टाइटिस की रोकथाम के लिए प्राकृतिक विकल्प.

6 घंटे तक दृश्यमान सुरक्षा...

डलवाल लेक्टीफेन्स गाय के थनों के ऊपर एक लंबे समय तक चलने वाला अवरोध पैदा करता है जो न केवल गायों की मस्टाइटिस से रक्षा करता है, बल्कि उत्पादकता और मुनाफे की भी रक्षा करता है !

१ मिनट | २० मिनट | २ घंटे | ६ घंटे

उपलब्धि : १ लि, १० लि, और २० लि, पैक

मास्टिटिस की रोकथाम + थन की सुरक्षा + लाभ में बढत

We live milk

Product Information:
marketing.india@delaval.com I Website: www.delaval.in

Tel.: +9120 25928200 DeLavalIndia

DeLaval Private Limited (H.O)
A-3, Abhimanshree Society, Pashan Road, Pune - 411008. India.

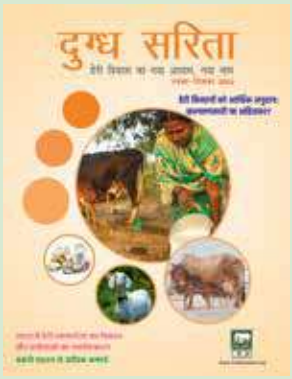

दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा प्रकाशित द्विमासिक पत्रिका

वर्ष : 6 अंक : 6 नवंबर–दिसंबर, 2022

सम्पादकीय मंडल

अध्यक्ष

डॉ. आर. एस. सोढ़ी

अध्यक्ष, इंडियन डेरी एसोसिएशन

सदस्य

डॉ. रामेश्वर सिंह
कुलपति
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
पटना

डॉ. ओमवीर सिंह
उप प्रबंध निदेशक
मदर डेरी फ्रूट्स एंड वेजीटेबल्स
प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

श्री सुधीर कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक
झारखंड दुग्ध उत्पादक सहकारी
महासंघ लिमिटेड, रांची

श्री किरीट मेहता
प्रबंध निदेशक
भारत डेरी, कोल्हापुर

डॉ. बी.एस. बैनीवाल
पूर्व प्राध्यापक
लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा
एवं पशु विज्ञान
विश्वविद्यालय, हिसार

डॉ. अर्चना वर्मा
प्रधान वैज्ञानिक
राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान
करनाल

डॉ. अनूप कालरा
कार्यकारी निदेशक
आयुर्वेट लिमिटेड, गाजियाबाद

प्रकाशक

श्री ज्ञान प्रकाश वर्मा

संपादक
डॉ. जगदीप सक्सेना

विज्ञापन व व्यवसाय
श्री नरेन्द्र कुमार पांडे

संपर्क

इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सैक्टर–IV,
आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022
फोन : 011-26179781
ईमेल : dsarita.ida@gmail.com

विषय सूची

अध्यक्ष की बात, आपके साथ — 6
डेरी किसानों को आर्थिक अनुदानः कल्याणकारी या अहितकर?
डॉ. आर. एस. सोढ़ी

योगदान — 9
भारत में डेरी सहकारिता का विकास और माहिलाओं का सशक्तिकरण
डॉ. जगदीप सक्सेना

विचार — 16
चारा सुरक्षाः भारतीय डेरी के वर्चस्व के लिए एक चुनौती
प्रस्तुतिः सुश्री प्रीति ग्रोवर

प्रश्नोत्तरी — 18
डेरी के लिए उपयुक्त पशुओं का चुनाव
संकलनः संपादकीय डेस्क

आजीविका — 24
बकरी पालन से अधिक कमाई
मुकेश कुमार सिंह

पशु पोषण — 30
पशुओं के लिए अजोला! एक सदाबहार हरा चारा
डॉ आनंद जैन, डॉ आदित्य मिश्रा, डॉ दीपिका डी. सीजर, डॉ संजू मंडल एवं डॉ पूनम यादव

समाचार — 33
किसान दिवस एवं अन्य समारोह
संकलनः संपादकीय डेस्क

कहानी — 36
परदा
यशपाल

डिस्क्लेमर

लेखकों द्वारा व्यक्त विचारों, जानकारियों, आंकड़ों आदि के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं, उनसे आईडीए की सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा अन्य सामग्री का कॉपीराइट अधिकार आईडीए के पास सुरक्षित है। इन्हें पुनः प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।

मूल्य

एक प्रति : 75 रु.

इंडियन डेरी एसोसिएशन

इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) भारत के डेरी सेक्टर का प्रतिनिधित्व करने वाली शीर्ष संस्था है। सन् 1948 में गठित इस संस्था ने देश को विश्व में सर्वाधिक दूध उत्पादन के शिखर तक पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभायी है। वर्तमान में इसके 3,000 से अधिक सदस्य हैं, जिनमें वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, डेरी उद्यमी, डेरी किसान, पशुपालक और डेरी के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने वाले डेरी कर्मी शामिल हैं। आईडीए द्वारा राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर ज्वलंत विषयों पर सम्मेलन, संगोष्ठियां एवं कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं, जिसकी सिफारिशों पर भारत सरकार द्वारा गंभीरता से विचार किया जाता है। आईडीए का मुख्यालय नई दिल्ली में है तथा इसके चार क्षेत्रीय कार्यालय क्रमशः उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में कार्यरत हैं। साथ अनेक राज्यों में इसके चैप्टर भी सक्रियता से कार्य कर रहे हैं। डेरी सैक्टर के सभी संबंधितों तक शोध परक व तकनीकी जानकारी और उपयोगी सूचनाओं के प्रसार के लिए आईडीए द्वारा पिछले लगभग सात दशकों से 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' और 'इंडियन डेरीमैन' का प्रकाशन किया जा रहा है। ये दोनों ही पत्रिकाएं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं। द्विमासिक हिन्दी पत्रिका 'दुग्ध सरिता' का प्रकाशन आईडीए की नयी पहल है।

आईडीए के पदाधिकारी

अध्यक्षः डॉ. आर. एस. सोढ़ी

उपाध्यक्षः श्री ए.के. खोसला और श्री अरुण पाटिल

सदस्य

चयनितः श्री सी.पी. चार्ल्स, डॉ. गीता पटेल, श्री रामचंद्र चौधरी, श्री चेतन अरुण नारके, श्री राजेश गजानन लेले, श्री अनिल बर्मन, डॉ. बिमलेश मान, डॉ. बिकाश चंद्र घोष, श्री संजीव सिन्हा, श्री बी.वी.के. रेड्डी, एवरेस्ट इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड और श्री अमरदीप सिंह चड्ढा **नामित सदस्यः** डॉ. जी.एस. राजौरिया, श्री एस.एस.मान, श्री सुधीर कुमार सिंह, दक्षिण क्षेत्र के प्रतिनिधि, पश्चिम क्षेत्र के प्रतिनिधि, श्रीमती वर्षा जोशी, डॉ. धीर सिंह और श्री मीनेश शाह

मुख्य कार्यालयः इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए भवन, सेक्टर– IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली– 110022, टेलीफोनः 26170781, 26165237, 26165355, ई–मेलः idahq@rediffmail.com, www.indairyasso.org

क्षेत्रीय, प्रांतीय एवं स्थानीय शाखाएं

दक्षिणी क्षेत्रः श्री सी.पी. चार्ल्स, अध्यक्ष, आईडीए भवन, एनडीआरआई परिसर, अडुगोडी, बेंगलुरू–560 030, फोन न. 080–25710661, फैक्स–080–25710161. **पश्चिम क्षेत्रः** श्री अरूण पाटिल, अध्यक्ष; ए–501, डाइनैस्टी बिजनेस पार्क, अंधेरी–कुर्ला रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई–400059 ई–मेलः arunpatilida@gmail.com/secretary@idawz.org फोन न. 91 22 49784009 **उत्तरी क्षेत्रः** श्री एस.एस. मान, अध्यक्ष; आईडीए हाउस, सेक्टर IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली–110 022, फोन– 011–26170781, 26165355. **पूर्वी क्षेत्रः** श्री सुधीर कुमार सिंह, अध्यक्ष, c/o एनडीडीबी, ब्लॉक–डी, डी.के. सेक्टर–II, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता–700 091, फोन– 033–23591884–7. **गुजरात राज्य चैप्टरः** डॉ. जे. बी. प्रजापति, अध्यक्ष; c/o एसएमसी डेयरी विज्ञान कॉलेज, आणंद कृषि विश्वविद्यालय, आणंद– 388110, गुजरात, ई–मेलः idagscac@gmail.com/jbprajapati@gmail.com **केरल राज्य चैप्टरः** डॉ. एस.एन. राजाकुमार, अध्यक्ष, c/o प्रोफेसर व अध्यक्ष, केवीएएसयू डेरी प्लांट, मन्नुथी, ई–मेलः idakeralachapter@gmail.com **राजस्थान राज्य चैप्टरः** श्री राहुल सक्सेना, अध्यक्ष, c/o केबिन न. 1, मनोरम 2 अम्बेशवर कॉलोनी, श्याम नगर मेट्रो स्टेशन के पास, जयपुर–302019 ई–मेलः idarajchapter@yahoo.com **पंजाब राज्य चैप्टरः** डॉ. बी.एम. महाजन, अध्यक्ष, c/o डेरी विकास विभाग, पंजाब लाइवस्टॉक कॉम्पलैक्स, चौथी मंजिल, आर्मी इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ के निकट, सेक्टर–68, मोहाली, फोनः 0172–5027285 / 2217020, ई–मेलः ida.pb@rediffmail.com **बिहार राज्य चैप्टरः** श्री डी.के. श्रीवास्तव, अध्यक्ष, c/o पूर्व प्रबंध निदेशक, मिथिला मिल्क यूनियन, हाउस नं. 16, मंगलम एन्कलेव, बेली रोड, सगुना एसबीआई के पास, पटना–814146 बिहार, ई–मेलः idabihar2019@gmail.com **हरियाणा राज्य चैप्टरः** डॉ. एस.के. कनौजिया, अध्यक्ष, c/o डेरी प्रौद्योगिकी प्रभाग, एनडीआरआई, करनाल–132001 (हरियाणा), फोन : 9896782850, ई–मेलः skkanawjia@rediffmail.com **तमिलनाडु राज्य चैप्टरः** श्री एस रामामूर्ति, अध्यक्ष; c/o डेरी साइंस विभाग, मद्रास पशु चिकित्सा कॉलेज, चेन्नई–600007 **आंध्र प्रदेश राज्य चैप्टरः** प्रो.रवि कुमार श्रीभाष्यम, अध्यक्ष; c/o कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी, श्री वेंकटेश्वर पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, तिरुपति–517502 ई–मेलः idaap2020@gmail.com **पूर्वी यूपी स्थानीय चैप्टरः** प्रोफेसर डी.सी. राय, अध्यक्ष; प्रोफेसर, डेरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, प्रमुख, पशुचिकित्सा एवं प्रौद्योगिकी, कृषि विज्ञान संस्थान, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी–221005, फोनः 0542–2368009, ई–मेलः dcrai@bhu.ac.in **पश्चिमी यूपी स्थानीय चैप्टरः** श्री विजेन्द्र अग्रवाल, अध्यक्ष; c/o कैलाश डेरी लिमिटेड, रिठानी, दिल्ली रोड, मेरठ फोनः 9837019596 ई–मेलः vijendraagarwal2012@gmail.com **झारखण्ड स्थानीय चैप्टरः** श्री पवन कुमार मारवाह, अध्यक्ष; c/o झारखण्ड दुग्ध महासंघ, एफटीसी कॉम्प्लेक्स, धुर्वा सेक्टर–2, रांची, झारखण्ड–834004 ई–मेलः jharkhandida@gmail.com

इंडियन डेरी एसोसिएशन

संस्थागत सदस्य

बेनीफैक्टर सदस्य

एग्रीकल्चर स्किल कौंसिल ऑफ इंडिया, गुरूग्राम (हरियाणा)

अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, अजमेर (राजस्थान)

अमृत फ्रेश प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

अपोलो एनीमल मेडिकल ग्रुप ट्रस्ट, जयपुर (राजस्थान)

आयुर्वेट लिमिटेड (दिल्ली)

बीएआईफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन, पुणे (महाराष्ट्र)

बड़ौदा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

बेनी इमपेक्स प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

बेलगावी जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक समिति यूनियन लि., बेलगावी (कर्नाटक)

भीलवाड़ा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ, भीलवाड़ा (राजस्थान)

बिहार राज्य दुग्ध सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)

बिमल इंडस्ट्रीज, यमुना नगर (हरियाणा)

बोवियन हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)

ब्रिटानिया डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

क्रीमी फूड्स लिमिटेड (दिल्ली)

सीपी मिल्क एंड फूड प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

डेयरी विकास विभाग टीवीएम, तिरुवनंतपुरम (केरल)

डोडला डेरी लिमिटेड, हैदराबाद (तैलंगाना)

ईस्ट खासी हिल्स जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड (मेघालय)

एवरेस्ट इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)

फार्मगेट एग्रो मिल्क प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

किसान प्रशिक्षण केन्द्र, डेयरी विकास, रांची (झारखंड)

खाद्य और बायोटेक इंजीनियर्स (I) प्राइवेट लिमिटेड, पलवल (हरियाणा)

फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी, आणंद (गुजरात)

फोंटेरा इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

जी आर बी. डेरी फूड्स प्राइवेट लिमिटेड, होसुर (तमिलनाडु)

गाँधीनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, गाँधीनगर (गुजरात)

जीईए प्रौसेस इंजीनियरिंग (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

गोविंद दुग्ध और दुग्ध उत्पाद लिमिटेड, सतारा (महाराष्ट्र)

गोमा इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड, ठाणे (महाराष्ट्र)

गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ लिमिटेड, आंणद (गुजरात)

हेटसन कृषि उत्पाद लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

हसन दुग्ध संघ, हसन (कर्नाटक)

हेरिटेज फूड्स लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

हिंदुस्तान इक्विपमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, इंदौर (मध्य प्रदेश)

आईडीएमसी लिमिटेड, आणंद (गुजरात)

इग्लू डेयरी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

आईटीसी फूड्स, बेंगलुरू, (कर्नाटक)

आईएफएम इलेक्ट्रोनिक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

इंडियन इम्यूनोलौजिकल्स लिमिटेड, (आंध्र प्रदेश)

भारतीय संभार एवं सामग्री प्रबंधन रेल संस्थान (दिल्ली)

जयपुर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)

झारखंड राज्य दुग्ध संघ, रांची (झारखंड)

कान्हा दुग्ध परीक्षण उपकरण प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

कौस्तुभ जैव–उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)

करीमनगर जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)

कर्नाटक सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, बेंगलुरू (कर्नाटक)

कीमिन इंडस्ट्रीज़ साउथ एशिया प्राइवेट लिमिटेड, चैन्नई (तमिलनाडु)

केरल डेरी फार्मर्स वैलफेयर फंड बोर्ड (केरल)

खम्बेते कोठारी कैन्स एवं सम्बद्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, जलगांव (महाराष्ट्र)

कोल्हापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (महाराष्ट्र)

कच्छ जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कच्छ (गुजरात)

लेहुई इंडिया इंजनियरिंग एंड इक्विपमेंट प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

मालाबार रीजनल कोऑपरेटिव मिल्क प्रोड्यूसर्स यूनियन लिमिटेड, कोझिकोड (केरल)

मेसे म्यूनकेन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

मिथिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (बिहार)

एनसीडीएफआई, आणंद (गुजरात)

मदर डेरी फ्रूट एंड वेजीटेबल प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

भारतीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता एवं प्रबंधन संस्थान, सोनीपत (हरियाणा)

नियोजेन फूड एंड ऐनीमल सिक्योरिटी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, कोच्चि (केरल)

नाऊ टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

संस्थागत सदस्य

ओराना इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम (हरियाणा)

पायस मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)

पाली जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पाली (राजस्थान)

पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड, हरिद्वार (उत्तराखंड)

परम डेयरी लिमिटेड (दिल्ली)

पब्लिक प्रोक्योरमेंट ग्रुप (दिल्ली)

पोरबंदर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पोरबंदर (गुजरात)

प्रभात डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

रायचूर बेल्लारी एवं कोप्पल जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, बेल्लारी (कर्नाटक)

राजस्थान सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)

राजस्थान इलेक्ट्रोनिक्स एवं इंस्ट्रूमेंट्स लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)

राजारामबापू पाटिल सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, सांगली (महाराष्ट्र)

रेड काऊ डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, हुगली (पश्चिम बंगाल)

रॉकवेल ऑटोमेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

आरपीएम इंजीनियरिंग (I) लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

आर.के. गणपति चेट्टियार, तिरूपुर (तमिलनाडु)

साबरकांठा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, हिम्मतनगर (गुजरात)

संजय गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेरी टेक्नोलॉजी, पटना (बिहार)

सखी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमेटेड, अलवर (राजस्थान)

सीरैप इंड्रस्टीज़, नौएडा (उत्तर प्रदेश)

श्री भावनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)

श्री गणेश एग्रो वेट कार्पोरेशन, नवसारी (गुजरात)

सोलापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक व प्रक्रिया संघ मर्यादित (महाराष्ट्र)

साइंटिफिक एंड डिजिटल सिस्टम्स (नई दिल्ली)

श्री एडिटिव्स (फार्मा एंड फूड्स) प्राइवेट लिमिटेड, गांधी नगर (गुजरात)

सूरत जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, सूरत (गुजरात)

श्री विजयविशाखा दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)

श्री राजेश्वरी डेयरी उत्पाद उद्योग प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

स्टीलैप्स टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरु (कर्नाटक)

एसएसपी प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)

कृष्णा जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड, विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश)

रोहतक सहकारी दुग्ध उत्पादक लिमिटेड, रोहतक (हरियाणा)

उत्तर प्रदेश दीन दयाल उपाध्याय पशु विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान विश्वविद्यालय, मथुरा (उत्तर प्रदेश)

उमंग डेयरीज लिमिटेड (दिल्ली)

वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)

वलसाड जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, नवसारी (गुजरात)

विद्या डेरी, आनंद (गुजरात)

विजय डेरी प्रोडक्ट्स, सूरत (गुजरात)

ज्यूजर इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)

वार्षिक सदस्य

ए. अरुणाचलम एंड कंपनी, कांगेयम (तमिलनाडु)

आर्शा केमिकल्स प्राइवेट लिमिटेड, रायगढ़ (महाराष्ट्र)

एबीटी इंडस्ट्रीज़, कोयंबटूर (तमिलनाडु)

अभिषेक ट्रेडलिंक्स, मुंबई (महाराष्ट्र)

ऐमनेक्स इंफोटेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)

एजी–नेक्स्ट टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, मोहाली (पंजाब)

भरूच जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)

बी.जी चितले डेरी, सांगली (महाराष्ट्र)

भोपाल सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (मध्य प्रदेश)

कोरोनेशन वर्थ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

सीएचआर हेन्सन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

गोमती सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, अगरतला

जॉन बीन टेक्नोलॉजीस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)

कैरा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लि., आनंद (गुजरात)

कोएलनमेसे या ट्रेडफेयर प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

मिशेल जेनज़िक एजेंसी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

मदर डेयरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

मदर डेयरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड, इटावा (उत्तर प्रदेश)

पीएमएस इंजीनियर्स (इंटरनेशनल) सेवा (दिल्ली)

पुडुकोट्टई जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (तमिलनाडु)

राजकोट जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, राजकोट (गुजरात)

आरजीएस बेट न्यूट्रास्यूटिकलस कॉर्प, इरोड (तमिलनाडु)

सलेम जिला सहकारी दुग्ध उत्पाद संघ लिमिटेड, सलेम (तमिलनाडु)

सर्बल इंडिया ऐनीमल न्यूट्रीशन प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

श्री ममता दुग्ध डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, जालोर (राजस्थान)

एसपीएक्स फ्लो टेक्नोलॉजी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)

संगम दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, गुंटूर (आंध्र प्रदेश)

सुरेंद्रनगर जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, वाधवान (गुजरात)

तिरुवनंतपुरम क्षेत्रीय सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (केरल)

वास्टा बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

मेरा नया बचपन

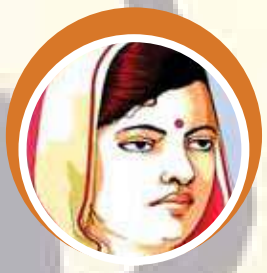

– सुभद्राकुमारी चौहान

बार-बार आती है मुझको मधुर याद बचपन तेरी।
गया ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी।।
चिंता-रहित खेलना-खाना वह फिरना निर्भय स्वच्छंद।
कैसे भूला जा सकता है बचपन का अतुलित आनंद?
ऊँच-नीच का ज्ञान नहीं था छुआछूत किसने जानी?
बनी हुई थी वहाँ झोंपड़ी और चीथड़ों में रानी।।

आ जा बचपन! एक बार फिर दे दे अपनी निर्मल शांति।
व्याकुल व्यथा मिटानेवाली वह अपनी प्राकृत विश्रांति।।
वह भोली-सी मधुर सरलता वह प्यारा जीवन निष्पाप।
क्या आकर फिर मिटा सकेगा तू मेरे मन का संताप?

मैं बचपन को बुला रही थी बोल उठी बिटिया मेरी।
नंदन वन-सी फूल उठी यह छोटी-सी कुटिया मेरी।।
'माँ ओ' कहकर बुला रही थी मिट्टी खाकर आयी थी।
कुछ मुँह में कुछ लिये हाथ में मुझे खिलाने लायी थी।।
पुलक रहे थे अंग, दृगों में कौतूहल था छलक रहा।
मुँह पर थी आह्लाद-लालिमा विजय-गर्व था झलक रहा।।
मैंने पूछा 'यह क्या लायी?' बोल उठी वह 'माँ, काओ'।
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से मैंने कहा – 'तुम्हीं खाओ'।।

पाया मैंने बचपन फिर से बचपन बेटी बन आया।
उसकी मंजुल मूर्ति देखकर मुझ में नवजीवन आया।।
मैं भी उसके साथ खेलती खाती हूँ, तुतलाती हूँ।
मिलकर उसके साथ स्वयं मैं भी बच्ची बन जाती हूँ।।
जिसे खोजती थी बरसों से अब जाकर उसको पाया।
भाग गया था मुझे छोड़कर वह बचपन फिर से आया।।

(संक्षिप्त प्रस्तुति)

डेरी किसानों को आर्थिक अनुदान: कल्याणकारी या अहितकर?

प्रिय पाठको,

दूध उत्पादन में सतत् वृद्धि और कीर्तिमान उत्पादन के कारण भारत ने विश्व पटल पर अपना सर्वप्रमुख स्थान बना लिया है। अब हमारा देश विश्व के लिए डेरी स्रोत बनने की ओर अग्रसर है। कृषि आय घटने और रोजगार के अवसरों की गिरावट के वर्तमान दौर मे डेरी और पशुपालन भारतीय कृषि के महत्वपूर्ण उप–क्षेत्र के रूप में उभरे हैं। इस पर डेरी सहकारिता सोने पर सुहागा है, जो अपनी आपूर्ति श्रृंखला यानी सप्लाई चेन की कुशलता के लिए प्रसिद्ध है। यह परंपरागत कृषि आजीविका का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं लाभकारी विकल्प है, जो महिला सशक्तिकरण का उत्तम व सशक्त माध्यम भी है। इससे परिवारों को नियमित रोजगार और आमदनी भी प्राप्त होती है। भारत में समावेशी विकास को गति देने और गरीबी उन्मूलन के लिए दूध उत्पादन में वृद्धि को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। इस तरह देश में 10 करोड़ से अधिक परिवारों को रोजगार देने का मार्ग प्रशस्त होगा।

भारत के राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में डेरी और पशुपालन का योगदान लगभग 5.2 प्रतिशत है, और देश की कृषि जीडीपी में इसका योगदान 30 प्रतिशत है। भारत में पिछले दशक में दूध उत्पादन की वृद्धि दर 4.6 प्रतिशत रही, जो इसी अवधि में कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर से कहीं अधिक है। अभी तक डेरी क्षेत्र की वृद्धि और विकास मांग आधारित और स्वयं–संचालित रही हैं। अपेक्षाकृत कम बजट आवंटन के बावजूद इस क्षेत्र में निरंतर और सतत् वृद्धि हो रही है।

अब भारत विश्व के सबसे प्रमुख डेरी देशों के बीच अपना विशेष स्थान बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील है। लक्ष्य यह है कि अगले 25 वर्षों में देश में दूध उत्पादन 628 मिलियन मीट्रिक टन (एमएमटी) पर पहुंच जाए और वैश्विक दूध

उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी बढ़कर 45 प्रतिशत हो जाए। आने वाले वर्षों में दूध और दूध उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए हमें तत्काल अनेक प्रभावी और प्रणालीगत सुधार करने होंगे। अनेक राज्यों ने डेरी किसानों को अधिक दूध उत्पादन के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से नई नीतियां बनाकर प्रोत्साहन राशि देने का निर्णय लिया है। इसके अंतर्गत डेरी किसानों को उनके द्वारा सहकारी समितियों की दी गयी दूध की कुल मात्रा के आधार पर आर्थिक अनुदान या सब्सिडी प्रदान की जाती है। डेरी सैक्टर के प्रारंभिक दौर और डेरी बाजार के अल्पविकसित होने की दशा में डेरी किसानों को प्रोत्साहन के तौर पर सब्सिडी प्रदान करना एक स्वागत योग्य पहल थी। परंतु अब, जब भारत वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार है, तो स्वाभाविक रूप से डेरी सैक्टर में सब्सिडी की प्रासंगिकता और उपयोगिता पर प्रश्न चिन्ह लग गया है।

सब्सिडी की प्रणाली पहली बार कर्नाटक में 2008–2009 में लागू की गयी। कर्नाटक ने डेरी सैक्टर की क्षमता और संभावना बहुत पहले आंक ली थी, इसलिए यह राज्य डेरी के विकास संबंधी पहल करने में सदैव अग्रणी रहा। राज्य में दूध का उत्पादन निरंतर वृद्धि करता रहा और इसके साथ ग्रामीण उत्पादकों के रोजगार तथा सतत् आमदनी में भी निरंतर वृद्धि होती रही। परंतु, सब्सिडी के प्रभाव और दूध की फुटकर कीमतों को बढ़ाने संबंधी नियमन के कारण अब डेरी किसान संकट में हैं। वर्तमान में कर्नाटक के दूध उत्पादकों को सहकारी समितियों को गाय या दूध बेचने पर 32–33 रुपये प्रति लीटर की कीमत प्राप्त होती है। इसमें 28 रुपये सहकारी समिति से मिलता है और पांच रुपये सब्सिडी के रूप में राज्य सरकार से मिलते हैं। दूध की कीमतों पर नियमन या नियंत्रण के कारण बाजार में गाय के दूध की कीमत 38 रुपये प्रति लीटर पर ठहरी हुई है। दूसरी ओर, गुजरात जैसे गैर–सब्सिडी वाले राज्य में डेरी किसानों को गाय के दूध की कीमत लगभग 37 से 40 रुपये मिलती है, और उपभोक्ताओं को बाजार में 52 रुपये प्रति लीटर की दर से भुगतान करना होता है। यानी बेंगलुरू में रहने वाले शहरी ग्राहक को मुंबई, दिल्ली या अहमदाबाद जैसे शहरों में रहने वाले उपभोक्ताओं की तुलना में दूध और दूध उत्पादों की कम कीमत चुकानी पड़ती है। स्पष्ट है कि कर्नाटक के शहरी उपभोक्ताओं को किसानों को दी जाने वाली दूध उत्पादन की सब्सिडी का लगभग 12 रुपये प्रति लीटर की दर से लाभ मिल रहा है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि राज्य के डेरी किसान अपनी सब्सिडी के माध्यम से शहरी उपभोक्ताओं को लाभ पहुंचा रहे हैं।

इस तुलना के माध्यम से मैं यह कहना चाहता हूँ कि पिछले कुछ वर्षों में शहरी उपभोक्ताओं का आर्थिक विकास हुआ है, जिससे उनकी खरीद (क्रय) क्षमता या शक्ति में वृद्धि हुई है। जब बाजार में वस्तुओं की कीमत स्वयं बाजार द्वारा तय नहीं की जाती, तो इसका लाभ अधिक खरीद क्षमता वाले उपभोक्ताओं को मिलता है, जबकि सीमांत किसान, जो पहले से ही दूध उत्पादन की बढ़ती लागत से त्रस्त हैं, बाजार में कम कीमत मिलने के कारण और अधिक संकट में फंस जाते हैं।

दूध उत्पादन के लिए आवश्यक आदानों (इनपुट्स), विशेष रूप से आहार और चारा, की कीमत में तेज वृद्धि के कारण देश के दूध उत्पादक संकट के दौर में गुजर रहे हैं। दूध उत्पादक संघ दूध की फुटकर कीमतों पर नियमन–नियंत्रण के कारण दूध की खरीद कीमत कम करने के लिए अत्यंत दबाव में रहते हैं। इसका खामियाजा अंततः डेरी विकास को भुगतना पड़ता है। वर्तमान नियमन के कारण फुटकर बाजार में दूध की कीमत नहीं बढ़ायी जा सकती। शहरी उपभोक्ताओं की बढ़ती आमदनी के अनुरूप दूध की कीमतों में वृद्धि होने से सहकारिता का मॉडल मजबूत होगा, जिससे दूध संघ डेरी किसानों को दूध की उचित कीमत का भुगतान कर सकेंगे। इस तरह भारत में डेरी के विकास में भी उनका योगदान बढ़ेगा।

राजस्थान, झारखंड, गोवा, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल, सिक्किम और हरियाणा जैसे अनेक राज्यों में डेरी किसानों को राज्य सरकार से सब्सिडी प्राप्त होती है, जिसका लाभ ग्रामीण उत्पादकों की कीमत पर शहरी उपभोक्ताओं को मिलता है।

खाद्य उद्योग के अलावा ऐसा कोई अन्य सैक्टर नहीं है, जहां कीमतों में थोड़ी–सी बढ़ोतरी होने पर भी मीडिया में शोर हो जाता है। खाद्य उद्योग में मुद्रा स्फीति यानी महंगाई की जांच–परख कभी उत्पादकों के नज़रिये से नहीं की जाती, जिन्हें उत्पादों की कीमत तय करने में 'शहरी उपभोक्ता केंद्रित नीति के कारण नुकसान उठाना पड़ता है। इस मामले में सरकार के अत्यधिक हस्तक्षेप से अंतिम उत्पादों की उचित कीमत तय करने में कठिनाई होती है, जिसका लाभ अंततः शहरी उपभोक्ताओं को प्राप्त होता है और ग्रामीण उत्पादक संकट में फंसा रह जाता है।

भारत दूध उत्पादन और खपत के मामले में एक लंबे समय से आत्मनिर्भर है। यह सन् 1970 के दशक में शुरू किये गये आपरेशन फ्लड कार्यक्रम के अंतर्गत अनेक वर्षों तक किये गये राष्ट्रव्यापी कड़े प्रयासों का परिणाम है। इससे जहां एक ओर गांवों में दूध के एक सुरक्षित बाजार का विकास हुआ, वहीं दूसरी ओर बचे हुए अतिरिक्त दूध को शहरी क्षेत्रों में भेजने और बेचने की व्यवस्था भी सुदढ़ हुई। ऑपरेशन फ्लड के जनक के रूप में विख्यात डॉ. वर्गीज़ कुरियन का दृढ़ विश्वास था कि सब्सिडी मूलरूप से बैसाखियों का काम करती है। दूध के व्यवसाय में सतत् रूप से निवेश कर सुधार करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए केवल डेरी प्लांट्स में ही नहीं बल्कि दूध संग्रह, भंडारण और परिवहन की प्रणाली में भी सुधार करने होंगे। इसके साथ ही कुछ अन्य क्षेत्रों में भी सुधार अपेक्षित है, जैसे पशु आहार उत्पादन इकाइयां, पशु आनुवंशिकी और प्रजनन, पशुचिकित्सा व स्वास्थ्य सेवाएं, दूध दुहने की मशीन व चारा काटने की मशीन आदि। डेरी उत्पादन को दीर्घकालीन स्तर पर बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि हम आज ही सुविधाओं के स्थायी विकास और उन्नयन में निवेश करें। तभी हम इसका लाभ भविष्य में उठा पाएंगे।

यही समय है जब सब्सिडी नीति की आलोचनात्मक समीक्षा करनी चाहिए। यह कीमतों के उचित प्रबंधन और खाद्य महंगाई के लिए महत्वपूर्ण होने के साथ ही ग्रामीण उत्पादकों के हित के लिए भी आवश्यक है।

(डॉ. आर. एस. सोढ़ी)

योगदान

भारत में डेरी सहकारिता का विकास और माहिलाओं का सशक्तिकरण

डॉ. जगदीप सक्सेना

सन् 1970 के दशक से पूर्व दूध उत्पादन और खपत के संदर्भ में भारत की गिनती सबसे पिछड़े देशों में की जाती थी। दूध की कमी को पूरा करने के लिए दूध का आयात किया जाता था। यह एक निराशाजनक स्थिति थी, क्योंकि भारत में डेरी पशुओं की संख्या विश्व में सर्वाधिक थी। आज भारत इस स्थिति से उबरकर डेरी का विश्व गुरू बनने की राह पर है। वर्ष 2020–21 में प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता बढ़कर 427 ग्राम हो गई है, जो वैश्विक औसत से अधिक है। इस क्रांतिकारी बदलाव के पीछे एक दूरदर्शी सोच, कारगर रणनीति, नीतिगत प्रोत्साहन और सभी संबंधितों का अथक परिश्रम रहा है। परंतु यदि सबसे बड़े और प्रभावी हस्तक्षेप को पहचानने का प्रयास करें तो निश्चित रूप से डेरी सहकारिता का नाम सबसे ऊपर आता है। भारत में डेरी सहकारिता का विकास सामाजिक–आर्थिक नजरिये से एक मील का पत्थर है, जिसने डेरी उद्योग की पुरानी परिपाटी को बदलकर एक नई और उज्ज्वल राह दिखाई है। भारत की विश्व प्रसिद्ध 'श्वेतक्रांति' को साकार करने में भी डेरी सहकारिता ने एक अहम् और प्रभावी भूमिका निभायी है।

उदय और अवधारणा

देश की स्वतंत्रता के पूर्व ब्रिटिश सरकार ने भारत के दूध उत्पादन व्यवसाय को केवल व्यावसायियों के हित के

दूध बिक्री की पारदर्शी व्यवस्था

नजरिये से देखा और निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन देने के लिए नीतियां बनाईं। सरकारी नीतियों में बिचौलियों को भी प्रश्रय दिया गया। इसका लाभ उठाकर पेस्टन जी एडुल जी ने 1915 में मुंबई में 'पोलसन' ब्रांड के डेरी उत्पादों की शृंखला शुरू की और 1930 में इसके लिए आणंद (तत्कालीन खैरा) में एक विशाल डेरी की स्थापना भी की। इसके माध्यम से स्थानीय डेरी किसानों के आर्थिक शोषण का दौर शुरू हो गया, क्योंकि किसानों के पास पोलसन डेरी को दूध बेचने के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं था। इससे किसानों के बीच असंतोष के स्वर उभरने लगे।

सरकार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में खैरा के डेरी किसानों ने संगठित होकर वर्ष 1946 में अपने सहकारी संगठन की शुरुआत करने का निर्णय लिया। सहकारिता के नेता और प्रणेता त्रिभुवन दास पटेल ने 'अमूल' (आणंद मिल्क यूनियन लिमिटेड) की नींव रखी। राष्ट्र के स्तर पर यह एक छोटा कदम था, परंतु इसने देश भर में सहकारिता की अवधारणा के प्रसार का काम किया। 'अमूल' का प्रदर्शन संतोषजनक था, परंतु इसके संचालन में व्यावसायिक या कहें पेशेवर अंदाज की कमी थी। इसलिए डेरी किसानों को उतना लाभ नहीं मिल रहा था, जितना अपेक्षित था।

वर्ष 1949 में 'अमूल' में डॉ. वर्गीज कुरियन नाम के तकनीकी रूप से दक्ष एक नौजवान को लाया गया। उद्देश्य था 'अमूल' को व्यावसायिक रूप से सफल बनाना, इसे एक ब्रांड के रूप में विकसित करना और इससे जुड़े दूध उत्पादकों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना। आज हम देखते हैं कि डॉ. कुरियन ने न केवल इन उद्देश्यों को शानदार ढंग से पूरा किया बल्कि देश में डेरी सहकारिता की मजबूत नींव भी रखी, इसका प्रसार किया और 'ऑपरेशन फ्लड' के माध्यम से देश को दूध उत्पादन में आत्मनिर्भर भी बनाया। इसीलिए डॉ. कुरियन को 'श्वेत क्रांति' के जनक के रूप में याद किया जाता है।

बढ़ते कदम

डेरी सहकारिता का 'आणंद पैटर्न' अपनी आश्चर्यजनक सफलता के कारण जल्दी ही देश भर में प्रसिद्ध और चर्चित हो गया। वर्ष 1964 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लाल

बहादुर शास्त्री 'अमूल' का भ्रमण करने आये और इसकी कार्यप्रणाली व व्यापक उपलब्धियों से अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने डॉ. कुरियन से देश भर में 'आणंद पैटर्न' पर सहकारी डेरी संगठन गठित करने का अनुरोध किया ताकि देश दूध उत्पादन में आत्मनिर्भर और अग्रणी बन सके। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए भारत सरकार ने अगले वर्ष 1965 में नेशनल डेरी डेवलपमेंट बोर्ड (एनडीडीबी) की स्थापना की और इसका पहला अध्यक्ष डॉ. कुरियन को बनाया गया।

उन्होंने 'ऑपरेशन फ्लड' के नाम से एक कार्ययोजना तैयार की, जिसके केन्द्र में डेरी सहकारी समितियां थीं। भारत सरकार के अन्य विभागों, संगठनों, संस्थानों आदि के सहयोग और समर्थन से इस कार्ययोजना को 1970 में लागू किया गया। विशेषज्ञों की सलाह व निर्देश तथा डेरी किसानों के सहयोग से गाँवों में सहकारी डेरी समितियों के गठन और संचालन का कार्य जोर–शोर से चल निकला। ऑपरेशन फ्लड के दूसरे चरण (1981–85) के दौरान 43,000 गाँवों में डेरी सहकारी समितियों का गठन हुआ। तीसरे चरण (1985–86) के दौरान डेरी सैक्टर के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने का कार्य किया गया और डेरी सहकारी समितियों की संख्या बढ़कर 73,000 तक पहुँच गई। ऑपरेशन फ्लड से पूर्व 1968–69 में दूध उत्पादन 21.2 मिलियन टन था, जो 1989–90 में बढ़कर 51.4 मिलियन टन हो गया। भारत न केवल दूध उत्पादन में आत्मनिर्भर हुआ, बल्कि कुछ देशों को दूध निर्यात भी करने लगा। देश की इस महत्वपूर्ण उपलब्धि को 'श्वेत क्रांति' का नाम दिया गया।

'ऑपरेशन फ्लड' के अंतर्गत एक 'नेशनल मिल्क ग्रिड' बनाकर दूध की अन्तरराज्यीय आपूर्ति की जाने लगी, जिससे देश भर में उचित कीमत पर दूध की उपलब्धता सुनिश्चित हुई। दूध के व्यापार में बिचौलियों का अंत हो गया। इससे दूध की कीमत के मौसमी उतार–चढ़ाव पर भी नियंत्रण पाया गया, जो कई बार कृत्रिम होता था। इस तरह सामान्य उपभोक्ताओं को उचित कीमत पर बेहतर क्वालिटी

सुरक्षा के मानदंडो का पालन

का दूध और दूध उत्पाद मिलने लगे। दूध की खपत और माँग तेजी से बढ़ने लगी, जिससे देश पोषण सुरक्षा की ओर अग्रसर हुआ। डेरी सहकारी समितियों की व्यावसायिक सफलता से यह निश्चित हो गया कि डेरी किसान, दूध उत्पाद से लेकर संग्रह और वितरण व बिक्री तक की पूरी प्रक्रिया को स्वयं संचालित करके बेहतर मुनाफा कमा सकते हैं। इससे डेरी व पशुपालन एक पूर्णकालिक स्वरोजगार के रूप में स्थापित हुआ, विशेषकर ग्रामीण युवाओं में दूध व्यवसाय के प्रति दिलचस्पी बढ़ने लगी।

सहकारिता में भागीदारी के समान अवसर मिलने के कारण केवल 2–3 पशुओं वाले छोटे एवं सीमांत किसान भी सहकारी समितियों के सदस्य बन गए। 'बूंद–बूंद से घट भरे' की कहावत को चरितार्थ करते हुए आज देश के कुल दूध उत्पादन में छोटे किसानों के योगदान को सराहा जा रहा है। भारतीय डेरी उद्योग की पहचान चुनिंदा स्थानों पर विशाल उत्पादन से नही, बल्कि छोटी–छोटी मात्रा में पशुपालकों के विशाल समूह द्वारा उत्पादन से

डेरी सहकारिता के विभिन्न आयाम

है। इसे भारतीय डेरी उद्योग की विशिष्टता माना जाता है और इससे सतत् उत्पादन को एक मजबूत आधार भी मिलता है। भूमिहीन मजदूर भी एक–दो पशु के साथ दूध उत्पादन कर रहे हैं। डेरी सहकारिता में महिलाएं अहम् और महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहीं हैं। भारतीय डेरी के कार्यबल में 70 प्रतिशत महिलाएं हैं और डेरी सहकारी समितियों में एक–तिहाई से अधिक महिलाएं हैं। इसलिए डेरी सहकारिता को ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण और महिला सशक्तिकरण का एक प्रभावी माध्यम माना जा रहा है। हाल के वर्षों में महिला सहकारी डेरी समितियां भी अस्तित्व में आईं हैं।

डेरी सहकारिता ने डेरी किसानों और पशुपालकों को एक मंच पर संगठित करके उन्हें मोल–भाव करने की बेहतर शक्ति प्रदान की है। चारा व पशु आहार की खरीद हो या डेरी उपकरणों की या फिर चिकित्सा सेवाएं, डेरी सहकारी समितियों को ये सभी प्रतियोगी कीमतों पर प्राप्त हो रहीं हैं, जिससे उनका लाभ बढ़ रहा है। भारत सरकार ने डेरी सहकारिताओं के हित में एआई और टीकाकरण सुविधाएं सदस्यों के घरों तक पहुंचाई हैं। गोपशुओं के आनुवंशिक सुधार द्वारा भी पशु उत्पादकता बढ़ाने के प्रयास किए गए हैं। डेरी सहकारिताओं को बुनियादी सुविधाओं के विकास और निर्माण के लिए सरकार की ओर से वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया है। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप वर्ष 2017 में 16.3 मिलियन डेरी किसान (कुल डेरी किसानों के लगभग 20 प्रतिशत), जिसमें 48 प्रतिशत महिलाएं थीं, देश की लगभग 1,88,000 डेरी सहकारी समितियों से संबद्ध थे। ये समितियां हर रोज औसतन 42.8 मिलियन लीटर दूध संग्रह करती थीं और 33.1 मिलियन लीटर दूध बेच देती थीं। इनकी दूध प्रसंस्करण यानी प्रोसेसिंग की कुल क्षमता 66 मिलियन लीटर प्रतिदिन थी। उल्लेखनीय है कि दूध के अलावा अन्य डेरी उत्पादों का उत्पादन और बिक्री भी डेरी सहकारिता की व्यावसायिक सफलता का एक महत्वपूर्ण सूत्र है। इसलिए राज्य स्तर पर डेरी सहकारी संगठन बड़े पैमाने पर घी, पनीर, चीज, दही, मलाई, श्रीखंड आदि का उत्पादन और बिक्री कर रहे हैं। कुछ डेरी सहकारिताओं ने नवीन उत्पाद जैसे हल्दी दूध, अदरक दूध, फ्लेवर्ड दूध, भांति–भांति के योगर्ट, आर्गेनिक घी आदि का उत्पादन व बिक्री भी शुरू की है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति पहले से मजबूत हुई है।

डेरी सहकारिताओं द्वारा दूध और डेरी उत्पादों के निर्यात की पहल भी की गई है। ग्रामीण क्षेत्रों में कुल दूध उत्पादन का लगभग 52 प्रतिशत भाग बाजार में बेचा जाता है, जबकि शेष का उपयोग घरेलू स्तर पर कर लिया जाता है। बाजार योग्य दूध का लगभग आधा भाग डेरी सहकारी समितियों और निजी कंपनियों द्वारा बिक्री के लिए संग्रह किया जाता है, जबकि आधा भाग असंगठित क्षेत्र द्वारा बाजार में पहुँचता है (आर्थिक सर्वेक्षण, 2018–19)। इसलिए जहां एक ओर डेरी सहकारी समितियों के कार्यकलापों में प्रसार की आवश्यकता है, वहीं दूसरी ओर, अधिक से अधिक डेरी किसानों को डेरी सहकारी समितियों से जोड़ना भी आवश्यक है।

वर्ष 2021 में भारत सरकार ने 'डेरी सहकार योजना' नाम से एक अन्य कार्यक्रम शुरू किया है, जिसका उद्देश्य डेरी सहकारिताओं को आर्थिक सहायता के माध्यम से विभिन्न सहकारी पहलुओं में सशक्त करना है। इसके अंतर्गत योग्य डेरी सहकारी समितियों को इन घटकों के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी–गौवंश का विकास, दूध का संग्रह, प्रसंस्करण और गुणवत्ता नियंत्रण, दूध और दूध उत्पादों का भंडारण व परिवहन, मूल्यवर्धन, पैकेजिंग, ब्रैंडिंग और मार्केटिंग, तथा दूध उत्पादों का निर्यात।

डेरी सहकारिता में महिलाओं की अहम् भागीदारी

भारत सरकार की डेरी उद्यमिता विकास योजना के अंतर्गत भी डेरी सहकारिताओं को पूंजीगत आर्थिक अनुदान और सस्ता ऋण देने की व्यवस्था की गई है। वस्तुतः डेरी सेक्टर के विकास की सभी योजनाओं व कार्यक्रमों में डेरी सहकारिता को प्रमुख स्थान दिया जा रहा है, क्योंकि इसे किसानों की आमदनी दुगुनी करने के लक्ष्य में भी सहायक माना गया है। हाल में भारत सरकार द्वारा एक अलग सहकारिता मंत्रालय के गठन से भी डेरी सहकारिता को बल और गति प्राप्त हुई है। साथ ही डेरी सहकारिता को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से आधुनिक, पर्यावरण अनुकूल, लागत प्रभावी तथा सतत् बनाने के प्रयास भी किए जा रहे हैं। डेरी के प्रचालन से जुड़ी विभिन्न प्रक्रियाओं में एआई (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस) और आईटी तकनीकों के उपयोग की शुरुआत की गई है। सहकारी समिति और संघ अपने मोबाइल ऐप के माध्यम से सदस्यों से बेहतर संपर्क व संवाद स्थापित कर सुविधाओं को वास्तविक समय में उन तक पहुँचा रहे हैं। इससे सहकारी समितियों की कार्यकुशलता बढ़ी है। डेरी में पानी के कुशल उपयोग और पुर्नउपयोग की विधियां भी लागू की जा रही हैं। अक्षय स्रोतों से ऊर्जा उत्पादन के लिए गोबर गैस प्लांट के साथ सौर ऊर्जा के उपयोग को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। स्वच्छता के मानकों को लागू करके स्वच्छ और गुणवत्तापूर्ण दूध उत्पादन की तकनीकों को अपनाया जा रहा है, ताकि उपभोक्ताओं को दूध की उत्तम गुणवत्ता के प्रति आश्वस्त किया जा सके। लक्ष्य यह है कि डेरी सहकारी संगठनों के डेरी उत्पाद बाजार में निजी क्षेत्र की डेरी कंपनियों को उत्पादों को गुणवत्ता व कीमतों के स्तर पर कड़ी चुनौती दे सकें। इन उपायों से देश के आम उपभोक्ता भी लाभान्वित हो रहे हैं, क्योंकि उन्हें कीमतों के मौसमी उतार–चढ़ाव के बिना गुणवत्तापूर्ण दूध और अन्य डेरी उत्पाद बाजार में उपलब्ध हो रहे हैं।

महिलाओं का सशक्तिकरण

डेरी या कहें पशुपालन के कामकाज में ग्रामीण महिलाएं पुराने समय से ही अग्रणी भूमिका निभाती रही हैं। इसलिए डेरी सहकारिता में भी महिलाएं नेतृत्व करती दिखाई देती हैं। इसी कारण से भारत सरकार डेरी सहकारिता को महिलाओं

के सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण का सशक्त माध्यम मान रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'इंटरनेशनल डेरी फेडरेशन' के शिखर सम्मेलन–2022 में अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि ग्रामीण महिलाएं भारतीय डेरी सैक्टर को नेतृत्व और गति प्रदान कर रही हैं। डेरी सहकारिता में महिला सदस्यों की संख्या एक–तिहाई से अधिक है और बड़ी संख्या में महिला डेरी सहकारिता समितियां भी गठित की गईं हैं, जिनमें केवल महिलायें सदस्य होती हैं। वही डेरी सहकारिता से जुड़ी समस्त गतिविधियों का प्रबंधन और संचालन करती हैं। मुख्य रूप से डेरी सहकारिता के प्रोत्साहन और संवर्धन के लिए कार्य करने वाली भारत सरकार की स्वायत्त संस्था 'नेशनल डेरी डेवलपमेंट बोर्ड (एनडीडीबी)' ने डेरी सहकारिता में महिलाओं को प्रोत्साहन देने के लिए अनेक कदम उठाए हैं। इसके अंतर्गत डेरी सहकारी समितियों में महिला सदस्यों की संख्या बढ़ाने, महिला डेरी सहकारी समितियों के गठन में सहायता प्रदान करने, प्रबंधन समिति में महिला सदस्यों को शामिल करने और महिलाओं को बोर्ड सदस्य बनाने जैसे कदम उठाए जा रहे हैं।

एनडीडीबी ने वर्ष 1995 में एक अभिनव सोच के अंतर्गत पश्चिमी भारत के वलसाड, कोल्हापुर, वायनाड और गोवा में प्रयोग के तौर पर एक महिला डेरी सहकारिता नेतृत्व कार्यक्रम शुरू किया। इसका उद्देश्य सहकारी समितियों, संघों और महासंघों में सदस्य तथा प्रबंधक के रूप में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करना और उन्हें सशक्त बनाना था। यह कार्यक्रम सफल रहा और इसे देश भर में अपनाया तथा सराहा गया। एनडीडीबी ने डेरी सहकारिताओं को महिलाओं के प्रोत्साहन संबंधी गतिविधियां चलाने के लिए सहायता भी प्रदान की। इसके अंतर्गत अनेक गतिविधियां संचालित की गईं, जैसे महिला क्लब, महिला साक्षरता कार्यक्रम, बचत और ऋण संबंधी सहकारी समूह और महिलाओं को डेरी सहकारिता संबंधी कार्यों में प्रशिक्षण। महिलाओं को डेरी सहकारी समिति में सदस्यों की जिम्मेदारी से लेकर प्रबंधन व संचालन तक के कार्यों में प्रशिक्षित किया गया। इससे महिलाओं में जागरूकता बढ़ी और डेरी सहकारिताओं में उनकी भागीदारी तेजी से बढ़ने लगी। एनडीडीबी द्वारा डेरी सहकारिता में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए नियमित रूप से संगोष्ठियों, सम्मेलनों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों आदि का आयोजन किया जाता है, जिनमें महिलाओं को प्रोत्साहन व तकनीकी सहायता मिलती है।

महिला डेरी सहकारी समितियों के गठन से महिलाओं में आत्मनिर्भरता, नेतृत्व और स्वयं निर्णय लेने की क्षमता विकसित हुई है, जो उन्हें डेरी से इतर कार्य करने में भी सहायता करती हैं। इस प्रकार के सशक्तिकरण से ग्रामीण महिलाओं का आत्मविश्वास कई गुना बढ़ गया है, जिससे समाज और परिवार में उनकी स्थिति मजबूत हुई है। वे बिना पुरुषों की सहायता व साथ के भी महत्त्वपूर्ण कार्य करने में सक्षम हुई हैं। महिलाओं के सशक्तिकरण से ग्रामीण समाज में शिक्षा का स्तर भी बढ़ गया है। अब ग्रामीण परिवारों में बेटे और बेटियों को समान रूप से शिक्षित करने का चलन दिखाई देने लगा है। एनडीडीबी द्वारा जिला–स्तरीय दुग्ध उत्पादक संघों को सलाह व निर्देश दिया जा रहा है कि गाँव के स्तर पर अधिक से अधिक महिला डेरी सहकारी समितियों के गठन को बढ़ावा दिया जाए।

राष्ट्रीय डेरी योजना के प्रथम चरण (2012–2020) के अंतर्गत डेरी सहकारिता में महिलाओं की भागीदारी में सार्थक रूप से वृद्धि हुई है। योजना के अंतर्गत पंजीकृत कुल सदस्यों (7.64 लाख) में 45 प्रतिशत से अधिक महिलाएं थीं। महिला प्रसार अधिकारियों की तैनाती से भी महिलाएं आगे बढ़कर नेतृत्व करने के लिए प्रेरित हुई है। योजना अवधि के दौरान देश भर में लगभग 4,000 महिला डेरी सहकारी समितियों का गठन हुआ, जो महिलाओं की भागीदारी में तेजी से बढ़ते प्रभाव को दर्शाता है। आज देश भर में महिला डेरी सहकारी समितियां सफलता की अनेकानेक कहानियां लिखकर आत्मनिर्भरता की नई मिसाल कायम कर रहीं हैं। ■

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान

हिसार-125 001 (हरियाणा) भारत

ICAR-Central Institute for Research on Buffaloes

Hisar - 125 001 (Haryana) India

www.cirb.res.in | Toll Free Helpline No. : 1800-180-1043

उन्नत भैंस पालन के सिद्धान्त

- कृत्रिम गर्भाधान द्वारा उत्तम नस्ल पैदा करें।
- संतुलित आहार व्यवस्था अपनाएं : भूसा व हरा चारा (भर पेट) + दाना मिश्रण दलिया बनाकर (एक किलो प्रति दो किलो दूध उत्पादन पर)।
- दाना मिश्रण की संरचना: [40% अनाज : मक्का/गेहूं/जौ/बाजरा] + [35% खल : बिनौला/सरसों/मुंगफली] + [22% चोकर/छिलका : गेहूं/धान/चना] + [2% खनिज लवण मिश्रण] + [1% नमक]
- झोटी पहला बच्चा तीन साल की उम्र में तथा भैंस हर साल बच्चा दे [अच्छी नस्ल + पौष्टिक आहार + गर्मी से बचाव + मद/ताप के लक्षण की पहचान + ब्याने के 2 महीने पश्चात डाक्टरी जांच + गर्भाधारण की जांच]
- खनिज लवण मिश्रण अवश्य दें।
- बिमारियों से बचाव हेतु समय पर टीकाकरण करवाएं : खुरपका-मुँहपका (FMD) + गलघोंटू (HS): जनवरी तथा जुलाई । ब्रुसेलोसिस: केवल कटड़ियों / गर्भरहित भैंसों में ।
- थनैला से बचाव करें - दूध दोहने के तुरन्त बाद भैंस को बैठने न दें तथा जोहड़ में न ले जाएं, दुहने के बाद थनों को दवा घोल में डुबोयें, पशुशाला को साफ सुथरा हवादार रखें, बच्चों को मां से टाल कर बोतल/तसले में दूध पिलाएँ, रोगग्रस्त थन को अंत में दूहें।
- पशु का रिकार्ड रखें - दूध उत्पादन, जनन, कृत्रिम गर्भाधान, बिमारी, बचाव के टीके, उपचार, व्यय/आमदनी।
- बिचौलियों से बचें, दूध सीधा उपभोक्ता तक पहुचाएं। दूध का प्रसंस्करण द्वारा मूल्यवर्धन करें ।

www.cirb.res.in | Toll Free Helpline No. : 1800-180-1043

विचार

चारा सुरक्षा: भारतीय डेरी के वर्चस्व के लिए एक चुनौती

डॉ. आर. एस. सोढ़ी
अध्यक्ष, इंडियन डेरी एसोसिएसन
प्रस्तुति : सुश्री प्रीति ग्रोवर, एग्जीक्यूटिव, आईडीए

वर्ष 2021 में भारत 210 मिलियन मीट्रिक टन (एमएमटी) के वार्षिक दूध उत्पादन के परिणामस्वरूप दूध की कमी वाले देश से दुनिया के सबसे अग्रणी दूध उत्पादक में बदल गया है। अगले दशक में पशु चिकित्सा सेवाओं, कृत्रिम गर्भाधान, किसानों की शिक्षा और चारा या आहार (फीड) उपलब्धता के व्यापक नेटवर्क के साथ, भारत का दुनिया के लिए डेरी स्रोत बनने का लक्ष्य है। भारत का दूध उत्पादन वर्ष 2047 तक, यानी अगले 25 वर्ष में, बढ़ती आबादी के कारण डेरी उत्पादों की बढ़ती मांग, ग्राहकों की उच्च खरीद या क्रय शक्ति, पोषण पर बढ़ते जोर से लगभग 628 एमएमटी तक पहुंचने की सम्भावना है। इस विशाल दुग्ध उत्पादन स्तर को प्राप्त करने के लिए उपयुक्त निवेश, आपूर्ति श्रृंखला कुशलता, मानव संसाधन, और सबसे महत्वपूर्ण रूप से मवेशियों की गुणवत्ता से संबंधित क्षेत्रों में एक रणनीतिक और केंद्रित विकास योजना की आवश्यकता है। जबकि विभिन्न नस्लों की आनुवंशिक क्षमता में सुधार के लिए बहुत काम किया गया है, तथापि पशु पोषण में सुधार के लिए अभी भी पर्याप्त प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। साक्ष्य बताते हैं कि पशु को खिलाया गया पोषण युक्त संतुलित आहार पशु की उत्पादकता बढ़ाने में अत्यधिक प्रभावी होता है।

भारत की लगभग 20 प्रतिशत पशुधन आबादी और लगभग 17.5 प्रतिशत मानव आबादी दुनिया के केवल 2.3 प्रतिशत भूमि क्षेत्र पर है। मानव जनसंख्या 1.6 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है, जबकि पशुधन संख्या 0.66 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। भारत की पशुधन आबादी 2012 के

मिश्रित मवेशी चारा

512.06 मिलियन से बढ़कर 2019 में 535.82 मिलियन हो गई, जो 0.66 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर के साथ पिछली पशुगणना की तुलना में 4.6 प्रतिशत की वृद्धि को प्रदर्शित करती है।

चुनौतियां

किसान के दुग्ध उत्पादन की कुल लागत में पशु आहार की हिस्सेदारी 70 प्रतिशत है। भारत में कई एजेंसियों ने चारा संसाधनों की कमी की सूचना दी है। इसके अतिरिक्त, उपलब्ध संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग नहीं किया जा रहा है। देश के सकल फसल क्षेत्र के लगभग 4.9 प्रतिशत पर ही चारे की खेती की जाती है और यह क्षेत्र पिछले 25 वर्षों से स्थिर है। वर्तमान में, देश लगभग 31 प्रतिशत हरे चारे (851 बनाम 590 मिलियन टन) की शुद्ध कमी (मांग बनाम आपूर्ति) का सामना कर रहा है। लगभग 12 प्रतिशत सूखा चारा (531 बनाम 468 मिलियन टन) और 29 प्रतिशत कंसंट्रेट या रातब या सांद्र (86 बनाम 61 मिलियन टन) की कमी भी है। इससे प्रोटीन (सीपी) और ऊर्जा के मामले में पोषक तत्वों की आपूर्ति में निरंतर कमी हो रही है।

भारत के पशुधन क्षेत्र में उत्पादकता वृद्धि और सकल घरेलू उत्पाद में योगदान की संभावनाएं काफी हैं। भारत के मवेशी यूरोप, संयुक्त राज्य या इज़राइल की तुलना में प्रति दुग्धकाल चार से सात गुना कम दूध का उत्पादन करते है। पशुधन की कम उत्पादकता के लिए विभिन्न कारणों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, लेकिन गुणवत्ता वाले चारे की अपर्याप्त आपूर्ति इसका मुख्य कारण है। पशुधन उत्पादकता बढ़ाने की दिशा में चारा उपलब्धता पर विचार करना चाहिए।

बढ़ती पशुधन आबादी हरे चारे की आपूर्ति के लिए सीमित भूमि संसाधनों पर अधिक दबाव डालती है। इसके अतिरिक्त, समय पर उर्वरक और सिंचाई जैसे कृषि आदानों की अनुपलब्धता के साथ–साथ चारा फसलों के लिए खेती योग्य भूमि की सीमित उपलब्धता, चारा उपज बढ़ाने की प्रमुख चुनौतियां हैं। इसके अलावा, कुशल संरक्षण और भंडारण तकनीकों के अभाव में, चारे की बर्बादी की संभावना है, जिसके परिणामस्वरूप किसान चारा उत्पादन में भारी निवेश करने से हिचकिचा रहे हैं। भारतीय बाजार में कंसंट्रेट आहार (फीड) की वर्तमान आवश्यकता 84 एमएमटी है और केवल 61 एमएमटी उपलब्ध है। अगले 25 वर्षों में यानी वर्ष 2050 तक यह आवश्यकता लगभग 252 एमएमटी तक बढ़ जाएगी। चारे की माँग के अनुरूप उत्पादन क्षमता बढ़ाने और दशकों में 639 एमएमटी दूध उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए 1.25 लाख करोड़ रुपये की आवश्यकता होगी।

इन चुनौतियों को देखते हुए, हितधारकों, नीति निर्माताओं और सरकार को इस अपर्याप्तता के चक्र को तोड़ने के लिए हस्तक्षेप करना चाहिए और साल भर चारे और चारे की आपूर्ति सुनिश्चित करनी चाहिए।

चुनौतियों पर नियंत्रण : कार्य योजना

- अपक्षरित घास के मैदानों की पुर्नस्थापना, चारा फसल उत्पादन में शामिल लोगों के लिए क्षमता निर्माण और स्थानीय समुदायों के साथ घास के मैदानों के सहयोगी

पशु पोषण का आधार गुणवत्तापूर्ण चारा

प्रबंधन के लिए एक राष्ट्रीय नीति विकसित की जानी चाहिए। उपयोगी फसल अवशेषों को जलाने और ऐसे उद्योगों के लिए एक अन्य नीति स्तर के हस्तक्षेप की आवश्यकता है जो ऐसे अवशेषों को पशुओं के लिए खाद्य चारे में परिवर्तित कर सकते हैं।

- चारा फसलों को भी कृषि फसलों के समान न्यूनतम समर्थन मूल्य के साथ बीमा सुरक्षा की सुविधा दी जानी चाहिए। ताकि इसकी खेती को बढ़ावा दिया जा सके।
- चारा विकास कार्यक्रमों को मनरेगा और अन्य केंद्र/राज्य सरकार के कार्यक्रमों से जोड़ा जाना चाहिए। चारा विकास कार्यक्रमों को केंद्र सरकार की योजनाओं जैसे राष्ट्रीय पशुधन मिशन, बागवानी मिशन और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन आदि के अनुरूप बनाने की आवश्यकता है ताकि पशुधन उत्पादक बेहतर आमदनी के लिए वित्तीय ऋण और बाजार का उचित लाभ उठा सकें।
- ग्राम स्तर पर वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देने के लिए और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है। चारे की खेती का भाविष्य ग्राम स्तर पर ही निर्भर है, क्योंकि वहाँ पानी की उपलब्धता अधिक है।
- इसी तरह, सरकार को डेरी सहकारी समितियों के साथ साझेदारी करनी चाहिए और चारे की खेती के लिए भूमि उपलब्ध करानी चाहिए। ■

प्रश्नोत्तरी

डेरी के लिए उपयुक्त पशुओं का चुनाव

प्रस्तुतिः संपादकीय डेस्क

1. डेरी पशु खरीदते समय किस बात पर ध्यान देना चाहिए?

डेरी पशु को खरीदते समय, संकर नस्ल के संबंध में विदेशी रक्त का स्तर, दूध उत्पादन, दुग्धकाल की संख्या, वंशावली का विवरण, रोग और स्वास्थ्य की स्थिति, थन के स्वास्थ्य की सही जानकारी प्राप्त करने के लिए विश्वसनीय स्रोत के बारे में पता करें। गर्भवती पशुओं के मामले में गर्भावस्था की स्थिति और दूध देने वाले पशुओं के मामले में दूध उत्पादन को सत्यापित करना आवश्यक है। इसके अलावा, पशु क्रियाशील होना चाहिए, पैर पीछे की ओर से सीधा और मजबूत होना चाहिए। चेस्ट (छाती) चौड़ी होनी चाहिए। शरीर, एक तरफ से देखने पर मेखाकार होना चाहिए। इसमें अतिरिक्त फैट नहीं जमा होना चाहिए क्योंकि इससे प्रजनन दक्षता प्रभावित हो सकती है। उत्तम डेरी पशु का शरीर आमतौर पर थोड़ा पतला होता है और कूल्हे की हड्डियां चौड़ी और मजबूत होती हैं।

2. किफायती पशु कौन है?

किफायती पशु एक ऐसा पशु है जो एक वर्ष में एक बछड़ा या बछड़ी पैदा करता है, उसमें रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता होती है तथा कम से कम लागत यानी प्रति लीटर दूध उत्पादन लागत न्यूनतम होती है।

3. देशी नस्लों में सुधार करना क्यों आवश्यक है? महत्वपूर्ण देशी नस्लें कौन–कौन सी हैं और वे कहां उपलब्ध हैं?

पशुओं की शारीरिक बनावट भी जांचे

देशी नस्लें हमारी मौजूदा कृषि–जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल हैं और कई उष्णकटिबंधीय रोगों के लिए प्रतिरोधी हैं। ये सीमांत और खराब फीड और चारा संसाधनों पर भी बेहतर उत्पादन कर सकती हैं। इनमें कुछ नस्लें अपने अधिक दूध और फैट उत्पादन के लिए जानी जाती हैं। परंतु, चयन के अभाव में समय के साथ–साथ इन पशुओं की दूध उत्पादन क्षमता में कमी आती गई है। श्रेष्ठ उत्पादक विदेशी नस्लों में उपर्युक्त विशेषताएं उपलब्ध नहीं हैं और गर्म जलवायु वाले भारतीय परिस्थितियों में इनका प्रबंधन करना बहुत कठिन है। इसलिए देशी नस्लों में सुधार किया जाना चाहिए। महत्वपूर्ण देशी दुधारू पशु नस्लें साहीवाल पंजाब में, गिर और कांकरेज गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में, थारपारकर राजस्थान के जोधपुर और जैसलमेर जिलों में, राठी, राजस्थान के बीकानेर और गंगानगर जिलों में और रेड सिंधी उत्तराखंड में पाई जाती हैं। जबकि भैंस की नस्लें मुर्रा, हरियाणा, पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में और मेहसाना, जाफराबादी, बन्नी गुजरात में, नीली–रावी पंजाब में और पंढरपुरी महाराष्ट्र में पाई जाती हैं।

4. अपने पशु की प्रजनन दक्षता में सुधार कैसे करें?

प्रजनन दक्षता, पशुओं के आहार और प्रबंधन का एक परिणाम है। स्वस्थ पशुओं में प्रजनन दक्षता अधिक होती है। इसलिए अधिक प्रजनन दक्षता के लिए, पशुओं को उनके जीवन चक्र के चरण के आधार पर अच्छी तरह से संतुलित आहार खिलाया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, गर्मी में आने का सही पता लगाना, गर्भाधान का उचित समय, गर्भाधान की उचित तकनीक, उपयोग किए जाने वाले वीर्य की गुणवत्ता भी प्रजनन दक्षता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण घटक हैं। प्रजनन संबंधी रोग केवल पशुओं के छोटे प्रतिशत (15–20 प्रतिशत) में बांझपन का कारण हैं।

5. मैं अपने वर्तमान पशुओं से अधिक उत्पादन क्षमता की संतान कैसे प्राप्त कर सकता हूं?

श्रेष्ठ उत्पादक माता–पिता की संतानें अधिक उत्पादक होती हैं। इसलिए वर्तमान मादा पशुओं को दूध उत्पादन के लिए श्रेष्ठ आनुवंशिक गुण वाले सांड़ों के वीर्य का उपयोग करके संतान पैदा करना चाहिए। इससे अधिक उत्पादन और उत्पादकता वाले संतान प्राप्ति की संभावना बढ़ जाती है। अपने पशु के प्रजनन के लिए उपयोग किए जाने वाले वीर्य को 'ए' या 'बी' श्रेणी के वीर्य केंद्र से उत्पादित विश्वसनीय स्रोत से प्राप्त करने की आवश्यकता है तथा प्रजनन नीति का पालन किया जाना चाहिए।

6. डेरी के लिए सबसे उपयुक्त पशु कौन सा है–देशी गाय, संकर नस्ल की गाय या भैंस?

पशु नस्ल या नस्ल संयोजन का विकल्प मुख्य रूप से संसाधन की उपलब्धता, जलवायु परिस्थितियों, आवश्यक इनपुट (आहार और स्वास्थ्य के देखभाल की सुविधाओं) की उपलब्धता, दूध के लिए बाजार

अयन/थन का स्वास्थ्य भी जांचे

की उपलब्धता, दूध के मूल्य का निर्धारक मापदंड आदि पर निर्भर करता है। संसाधन की कम उपलब्धता की स्थितियों में देशी गायों या भैंसों को पसंद किया जा सकता है, जबकि मध्यम से उत्तम संसाधनों की उपलब्धता होने पर संकर नस्ल के गायों को प्राथमिकता दी जा सकती है। ऐसे स्थानों पर जहां फैट प्रतिशत ही मूल्य का मापदंड है, वहां भैंसों को प्राथमिकता दी जा सकती है।

7. क्या बेहतर है – जर्सी संकर पशु अथवा एचएफ संकर पशु? विदेशी रक्त का कितना प्रतिशत एक संकर नस्ल के पशु के लिए आदर्श है और क्यों?

किसी व्यक्ति को किसी नस्ल पर निर्णय लेने से पहले संसाधन की उपलब्धता पर विचार करना चाहिए। यदि कम से मध्यम संसाधन उपलब्ध हों और जलवायु अधिक नमी वाली हो तो जर्सी संकर नस्ल उपयुक्त हैं। यदि आहार और प्रबंधन में कोई समस्या नहीं है, तो एचएफ संकर नस्ल की गायों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। फिर यदि, श्रेष्ठ फैट सामग्री वाले दूध की मांग है, तो संकर नस्ल अनुपयोगी होगी। अपनी जलवायु परिस्थितियों के अनुसार हमें 50 प्रतिशत विदेशी नस्ल वाले संकर पशुओं का पालना चाहिए क्योंकि विदेशी रक्त के स्तर में वृद्धि होने के साथ पशुओं में बीमारियों और हीट स्ट्रेस का खतरा अधिक होगा। ऐसे पशुओं का प्रबंधन करना कठिन हो जाएगा। ■

(साभारः एनडीडीबी)

THE ONE THING THAT MAKES ALL OUR PRODUCTS DELIGHTFULLY DELICIOUS IS THE GOODNESS OF OUR MILK.

sweet rich creamy happiness.

happiness of juicy mangoes with mishti doi.

soft creamy delicious happiness.

For more information, call 1800-1801-018 or visit: www.motherdairy.com

MOTHER DAIRY®

cheesy
wholesome
tasty
happy.

rich
creamy
happiness.

happy mix of
real fruits
with delicious
curd.

thick rich
fruity
happiness.

the happiest
mix of healthy
and tasty.

*Visual Depiction Only

नवंबर

- ☞ परजीवीनाशक दवा का घोल देने से पशुओं को परजीवी प्रकोप से बचाया जा सकता है, जिससे ना केवल पशुओं के स्वास्थ्य में सुधार होगा अपितु जो भोजन पशु खाता है उसका भी शरीर में सदुपयोग होता है तथा उत्पादन बढ़ता है।
- ☞ चारे की सही समय पर खरीद–फरोख्त व संग्रहण पर पूरा ध्यान दें।
- ☞ बहुवर्षीय घासों की कटाई करें। इसके बाद ये सुषुप्तावस्था में चली जाती हैं, जिससे अगली कटाई तापमान बढ़ने पर फरवरी–मार्च में ही प्राप्त होती है।
- ☞ इस माह में तापमान कम होने की स्थिति में पशुओं को सर्दी से बचाने के उपाय करें, इसके लिए रात में पशुओं को खुले में ना बांधें।
- ☞ पशुओं का बिछावन सूखा रखें।
- ☞ थनैला रोग से बचाव के उपाय करें। पशुओं में विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाव हेतु टीकाकरण करायें।
- ☞ पशुओं को लवण–मिश्रण की निर्धारित मात्रा दाने या बांटे में मिलाकर दें।

दिसंबर

- इस माह में तापमान अचानक कम होने से पशुओं को सर्दी से बचाने के उपाय करें। इसके लिए रात में पशुओं को खुले में ना बांधें। बाड़े की खिड़कियां भी बंद रखें।
- पशुओं का बिछावन सूखा रखें। पानी को ठहरने ना दें।
- विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाव हेतु टीकाकरण अवश्य करायें। स्वास्थ्य रक्षा के लिए पशु चिकित्सक की सलह पर उचित उपाय अपनाएं।
- परजीवीनाशक दवा का घोल देकर पशुओं को परजीवी प्रकोप से बचाया जा सकता है। पशु बाड़े में साफ–सफाई रखकर भी पशुओं को रोगों से बचाया जा सकता है।
- पशुओं को लवण–मिश्रण की निर्धारित मात्रा दाने या बांटे में मिलाकर दें।
- हरे चारे की सही समय पर खरीद व संग्रहण पर पूरा ध्यान दें।
- बहुवर्षीय घासों की कटाई करें। इसके बाद ये सुषुप्तावस्था में चली जाती हैं, जिससे अगली कटाई तापमान बढ़ने पर फरवरी–मार्च में ही प्राप्त होती है।

आजीविका

बकरी पालन से अधिक कमाई

मुकेश कुमार सिंह

वैज्ञानिक तरीके से बकरी पालन करके पशुपालक किसान अपनी कमाई को दोगुनी से तिगुनी तक बढ़ा सकते हैं। इसके लिए बकरी की उन्नत नस्ल का चयन करना, उन्हें सही समय पर गर्भित कराना और स्टॉल फीडिंग विधि को अपनाकर चारे–पानी का इन्तजाम करना बेहद फायदेमन्द साबित होता है।

बकरी पालन, हर लिहाज से किफायती और मुनाफे का काम है। फिर चाहे इन्हें दो–चार बकरियों के घरेलू स्तर पर पाला जाए या छोटे–बड़े व्यावसायिक फॉर्म के तहत दर्जनों, सैकड़ों या हजारों की तादाद में। बकरी पालन में न सिर्फ शुरुआती निवेश बहुत कम होता है, बल्कि बकरियों की देखरेख और उनके चारे–पानी का खर्च भी बहुत कम होता है। लागत के मुकाबले बकरी पालन से होने वाली कमाई का अनुपात 3 से 4 गुना तक हो सकता है, बशर्ते इसे वैज्ञानिक तरीके से किया जाए।

दुनिया में बकरी की कम से कम 103 नस्लें हैं। इनमें से 21 नस्लें भारत में पायी जाती हैं। इनमें प्रमुख हैं – बरबरी, जमुनापारी, जखराना, बीटल, ब्लैक बंगाल, सिरोही, कच्छी, मारवारी, गद्दी, ओस्मानाबादी और सुरती। इन नस्लों की बकरियों की बहुतायत देश के अलग–अलग इलाकों में

मिलती है। सन् 2019 की पशु जनगणना के अनुसार देश में करीब 14.9 करोड़ बकरियाँ हैं। देश के कुल पशुधन में गाय–भैंस का बाद बकरियों और भेड़ों का ही स्थान है।

बकरी की नस्ल कैसे चुनें?

बकरी की ज्यादातर नस्लों को घूमते–फिरते हुए चरना पसन्द होता है। इसीलिए इनके साथ चरवाहों का रहना जरूरी होता है। लेकिन उत्तर प्रदेश और गंगा के मैदानी इलाकों में बहुतायत से पायी जाने वाली बरबरी नस्ल की बकरियों को कम जगह में खूँटों से बाँधकर भी पाला जा सकता है। इसी विशेषता की वजह से वैज्ञानिकों की सलाह होती है कि यदि किसी किसान या पशुपालक के पास बकरियों को चराने का सही इन्तजाम नहीं हो तो उसे बरबरी नस्ल की बकरियाँ पालनी चाहिए और यदि चराने की व्यवस्था हो तो सिरोही नस्ल की बकरियाँ पालने से बढ़िया कमाई होती है।

बरबरी नस्ल की विशेषताएँ

बरबरी एक ऐसी नस्ल है, जिसे चराने का झंझट नहीं होता। ये एक बार में तीन से पाँच बच्चे देने की क्षमता रखती हैं। इनका कद छोटा लेकिन शरीर काफी गठीला होता है। ये अन्य नस्लों के मुकाबले ज्यादा फुर्तीली होती हैं। बरबरी नस्ल तेजी से विकासित होती है, इसीलिए इसके मेमने साल भर बाद ही बिकने लायक हो जाते हैं।

बरबरी नस्ल की बकरी रोजाना करीब एक लीटर दूध देती है। इसे कम लागत में और किसी भी जगह पाल सकते हैं। इन्हें बीमारियाँ कम होती हैं, इसलिए रख–रखाव आसान होता है। इसके माँस को ज्यादा स्वादिष्ट माना जाता है। इसीलिए बाजार में इसका अच्छा दाम मिलता है। बकरीद के अवसर पर बरबरी के पशुपालक अधिक बढ़िया दाम पाते हैं। बरबरी बकरी को फॉर्म हाउस के शेड में एलीवेटेड प्लास्टिक फ्लोरिंग विधि (स्टाल–फेड विधि) से भी पाला जा सकता है। इस विधि में चारे की मात्रा

बेहतर खानपान, उत्तम उत्पादन

और गुणवत्ता को बकरियों की उम्र और जरूरत के अनुसार नियंत्रित किया जाता है। इसमें बकरियों के रहने की जगह की साफ–सफाई रखना बहुत आसान होता है।

बकरी पालन के लिए प्रशिक्षण

मथुरा स्थित केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, फोनः (0565) 2763320, 2741991, 2741992, 1800–180–5141 (टोल फ्री), और लखनऊ स्थित द गोट ट्रस्ट (मोबाइल – 08601873052 से 63 तक) की ओर से बकरी पालन के लिए साल में चार बार प्रशिक्षण कोर्स चलाया जाता है। इसमें व्यावसायिक रूप से बकरी पालन करने वालों का मार्गदर्शन भी किया जाता है। इसके अलावा कृषि विज्ञान केन्द्र से भी बकरी पालन से सम्बन्धित प्रशिक्षण लिया जा सकता है।

वैज्ञानिक तरीका अपनाएँ

केन्द्रीय बकरी अनुसन्धान संस्थान के पशु आनुवांशिकी और उत्पाद प्रबन्धन विभाग के प्रधान वैज्ञानिक डॉ एम के सिंह के अनुसार, वैज्ञानिक तरीके से बकरी पालन करके पशुपालक किसान अपनी कमाई को दोगुनी से तिगुनी तक बढ़ा सकते हैं। इसके लिए बकरी की उन्नत नस्ल का चयन करना, उन्हें सही समय पर गर्भित कराना और स्टॉल फीडिंग विधि को अपनाकर चारे–पानी का इन्तजाम करना अत्यंत लाभकारी साबित होता है। उत्तर भारत में बकरियों को सितम्बर से नवम्बर और अप्रैल से जून के दौरान गाभिन

वैज्ञानिक देखभाल और रखरखाव

कराना चाहिए। सही समय पर गाभिन हुई बकरियों में नवजात मेमनों की मृत्युदर कम होती है।'

साफ–सफाई है सबसे जरूरी

ज्यादातर किसान बकरियों के बाड़े की साफ–सफाई के प्रति उदासीन रहते हैं। इससे बकरियों में होने वाली बीमारियों का खतरा बहुत बढ़ जाता है। इसीलिए यदि बाड़े का फर्श मिट्टी की हो तो समय–समय पर उसकी एक से दो इंच की परत को पलटते रहना चाहिए, क्योंकि इससे वहाँ पल रहे परजीवी नष्ट हो जाते हैं। बाड़े की मिट्टी जितनी सूखी रहेगी, बकरियों को बीमारियाँ उतनी ही कम होंगी।

माँ का पहला दूध

बकरी पालकों की अक्सर शिकायत होती है कि बकरी के तीन बच्चे हुए, लेकिन उनमें से बचा एक ही। आमतौर पर ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि बकरी का दूध नहीं बचता। इसलिए जब बकरी गाभिन हो तो उसे खूब हरा चारा और खनिज लवण देना चाहिए। पशुपालक जेर गिरने तक बच्चे को दूध नहीं पीने देते, जबकि बच्चे जितना जल्दी माँ का पहला दूध (खीस) पीयेगी, उनकी रोग–प्रतिरोधक क्षमता उतनी तेजी से बढ़ेगी और मृत्युदर में कमी आएगी।

चारा और दाना

ज्यादातर बकरी पालक बकरियों के आहार प्रबन्धन पर ध्यान नहीं देते। उन्हें चराने के बाद खूँटे से बाँधकर छोड़ देते हैं। जबकि चराने के बाद भी बकरियों को उचित चारा देना चाहिए, ताकि उनके माँस और दूध में वृद्धि हो सके। तीन से पाँच महीने के बच्चों को चारे में दाने के साथ–साथ हरी पत्तियाँ खिलाना चाहिए।

स्लॉटर ऐज यानी माँस के लिए इस्तेमाल होने वाले 11 से 12 महीने के बच्चों के चारे में 40 प्रतिशत दाना और 60 प्रतिशत सूखा चारा होना चाहिए। दूध देने वाली बकरियों को रोजाना चारे के साथ करीब 400 ग्राम अनाज देना चाहिए। प्रजनन करने वाले वयस्क बकरों को प्रतिदिन सूखे चारे के साथ हरा चारा और 500 ग्राम अनाज देना चाहिए।

बकरियों के पोषण के लिए प्रतिदिन दाने के साथ सूखा चारा होना चाहिए। दाने में 57 प्रतिशत मक्का, 20

प्रतिशत मूँगफली की खली, 20 प्रतिशत चोकर, 2 प्रतिशत खनिज मिश्रण और 1 प्रतिशत नमक होना चाहिए। सूखे चारे में सूखी पत्तियाँ, गेहूँ, धान, उरद और अरहर का भूसा होना चाहिए। ठंड के दिनों में बकरियों को गन्ने का सीरा भी जरूर दें। यदि ऐसा पोषक खाना बकरियों को मिले तो उसके माँस और दूध में अच्छा इजाफा होगा और अन्ततः किसानों की आमदनी दोगुनी से तीन गुनी हो जाएगी।

प्रजनन प्रबन्धन कैसे करें?

समान नस्ल की मादा और नर में ही प्रजनन करवाएँ। प्रजनन करने वाले परिपक्व नर बकरों की उम्र डेढ़ से दो साल होनी चाहिए। ध्यान रहे कि एक बकरे से प्रजनित सन्तान को उसी से गाभिन नहीं करवाएँ। यानी, बाप–बेटी का अन्तः प्रजनन नहीं होने दें। इससे आनुवंशिक विकृतियाँ पैदा हो सकती हैं। 20 से 30 बकरियों से प्रजनन के लिए एक बकरा पर्याप्त होता है। मादाओं में गर्मी चढ़ने के 12 घंटे बाद ही उसका नर से मिलन करवाएँ। प्रसव से पहले बकरियों के खाने में दाने की मात्रा बढ़ा दें।

मेमने का प्रबन्धन कैसे करें?

प्रसव के बाद मेमने को साफ कपड़े से पोछें। गर्भनाल को साफ और नये ब्लेड से काटें और उस पर आयोडीन टिंचर लगाएँ। जन्म के फौरन बाद मेमनों को माँ का पहला दूध पीने दें। जब मेमने 15 दिन के हो जाएँ तो उन्हें हरा चारा और दाना देना शुरू करें तथा धीरे–धीरे दूध की मात्रा घटाते रहें। तीन महीने की उम्र के बाद मेमनों को टीके लगवाएँ। इसके लिए पशु चिकित्सालय से सम्पर्क करें। वहाँ सभी टीके मुफ्त लगाये जाते हैं।

वजन करके ही बेचें बकरियाँ

बकरियों को नौ महीने के बाद ही बेचना फायदेमन्द होता है, क्योंकि तब तक वो पर्याप्त विकसित हो जाते हैं। बेचने के लिए घुमन्तू व्यापारियों से बचना चाहिए क्योंकि अक्सर वो बकरी पालक किसानों को कम दाम

बकरियों को आराम भी दें

देते हैं। इसीलिए बकरियों को पशु बाजार या कसाई या बूचड़खाने को सीधे बेचने की कोशिश करनी चाहिए और बेचते समय बकरी के वजन के हिसाब से ही उसका भाव तय किया जाना चाहिए। बकरी पालकों में इन बातों को लेकर जागरूकता बेहद जरूरी है, वरना उनका मुनाफा काफी कम हो सकता है।

बकरी पालन के लिए प्रोत्साहन योजना

ज्यादातर राज्य सरकारें बकरी पालकों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें रियायती दरों पर बैंकों से कर्ज लेने की योजनाएँ चलाती हैं। इसके बारे में किसानों को नजदीकी बैंक, कृषि विज्ञान केन्द्र या पशु चिकित्सालयों से सम्पर्क करना चाहिए।

अन्य सावधानियाँ

बकरी पालन से जुड़े उपकरणों की सफाई के लिए पशु चिकित्सक की सलाह लेकर ही कीटाणुनाशक दवाओं का उपयोग करें। बकरियों को पौष्टिक आहार दें, उन्हें सड़ा–गला और बासी खाना नहीं खिलाएँ, वरना वो बीमार पड़ सकती हैं। बकरियाँ खरीदने से पहले उन्हें पशुओं के डॉक्टर को जरूर दिखाएँ, क्योंकि बकरियों में कुछ ऐसी भी बीमारी होती हैं, जिनके सम्पर्क और संक्रमण से स्वस्थ बकरियाँ भी मर सकती हैं। बीमारी से मरने वाली बकरी को जला या दफना दें। बकरी पालन से अधिक लाभ के लिए वैज्ञानिक तौर–तरीके अनिवार्य रूप से अपनाएं। ■

(साभारः 'किसान ऑफ इंडिया')

राष्ट्रीय गोकुल मिशन

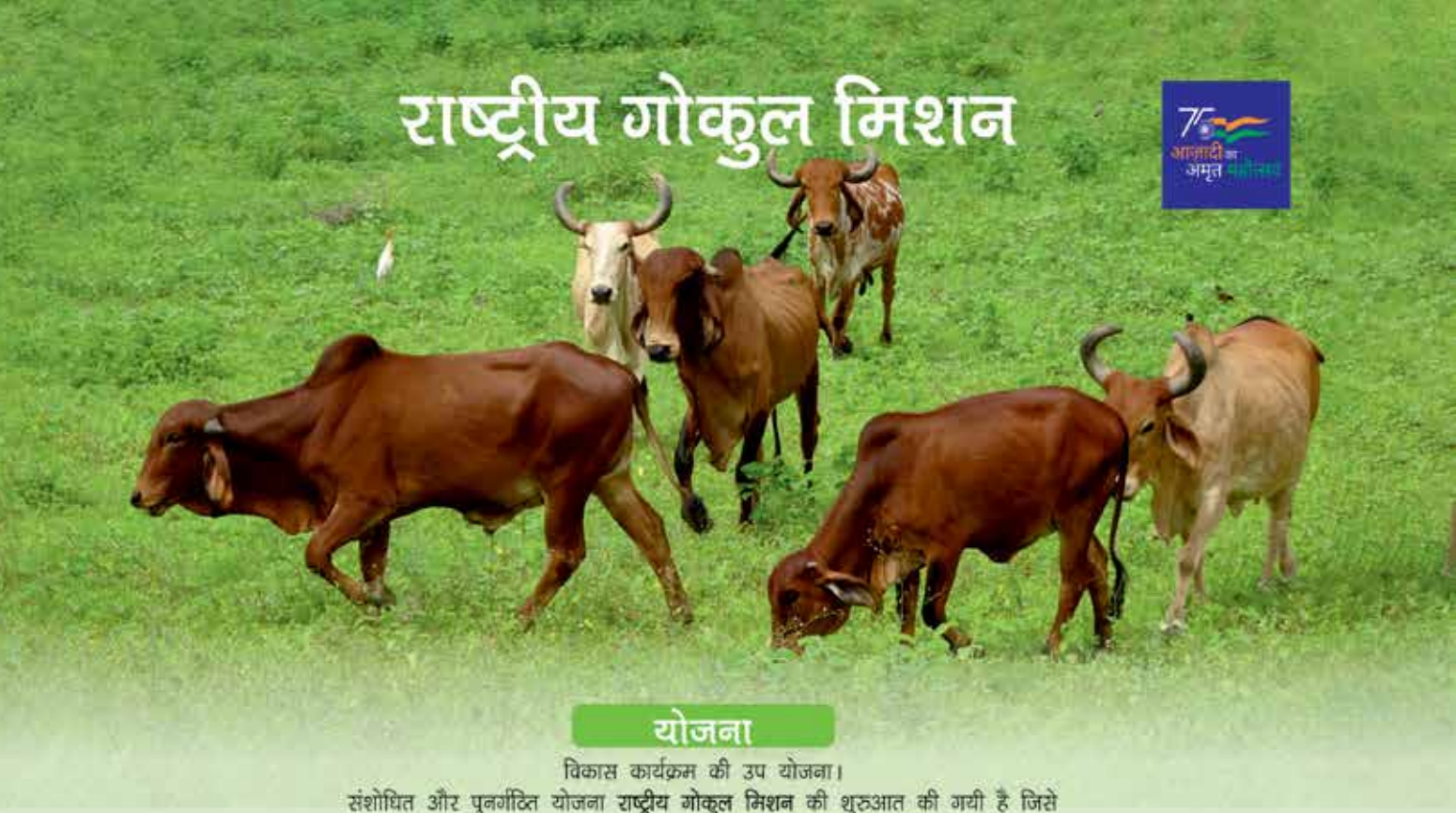

योजना

विकास कार्यक्रम की उप योजना।
संशोधित और पुनर्गठित योजना **राष्ट्रीय गोकुल मिशन** की शुरुआत की गयी है जिसे 2021-2022 से 2025-26 तक लागू किया जायेगा।

कार्यक्षेत्र और संचालन का क्षेत्र

योजना को पूरे देश में लागू किया गया है और दिशानिर्देशों में उल्लेखित सभी घटक वित्त पोषण के लिए पात्र हैं।

उद्देश्य

क उन्नत प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके संधारणीय तरीके से गायों की उत्पादकता एवं दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए।

ख प्रजनन उद्देश्यों के लिए उच्च आनुवंशिक योग्यता वाले सांडों के उपयोग का प्रसार।

ग प्रजनन नेटवर्क के सुदृढ़ीकरण और किसानों के दरवाजे पर कृत्रिम गर्भाधान सेवाओं के माध्यम से कृत्रिम गर्भाधान का विस्तार।

घ वैज्ञानिक और समग्र तरीके से स्वदेशी मवेशियों और भैंसों के पालन और संरक्षण को बढ़ावा देना।

वित्त पोषण प्रतिरूप

निम्नलिखित घटकों को छोड़कर योजना के सभी घटकों के लिए भारत सरकार से 100% अनुदान सहायता :

क) नस्ल गुणन फार्म की स्थापना के लिए पात्र उद्यमी, व्यक्ति, एसएचजी, एफपीओ, एफसीओ, जेएलजी, धारा 8 कंपनियों को 50% पूंजी सब्सिडी

ख) सेक्स सॉर्टेड सीमेन के उपयोग पर किसानों को 50% सब्सिडी, और

ग) पशुओं में आईवीएफ का उपयोग करके सुनिश्चित गर्भावस्था प्राप्त करने वाले किसानों / पशुपालकों के लिए 5,000 रुपये की सब्सिडी

क्रियान्वयन एजेंसियां

राज्य पशुधन विकास बोर्ड* / राज्य दुग्ध संघ* /
सी एफ एस पी और टी आई, सी सी बी एफ, सी एच आर एस, एन डी डी बी / आई सी ए आर / आई सी ए आर संस्थानों

* राज्य सरकारें राज्य कार्यान्वयन एजेंसी और योजना में भाग लेने वाली एजेंसियों पर निर्णय ले सकती हैं।

मुख्य विशेषताऐं

योजना निम्नलिखित के लिए वित्त पोषण प्रदान करती है :

क) नस्ल सुधार:

(i) वीर्य केंद्रों का सुदृढ़ीकरण;

(ii) सांड उत्पादन कार्यक्रम : संतति परीक्षण, पूर्वज चयन, जीनोमिक्स, त्वरित नस्ल सुधार कार्यक्रम (आईवीएफ प्रौद्योगिकी);

(iii) नस्ल गुणन फार्म की स्थापना

ख) एआई कवरेज का विस्तार:

(i) राष्ट्रव्यापी एआई कार्यक्रम;

(ii) मैत्री (MAITRIs) की स्थापना;

(iii) त्वरित नस्ल सुधार कार्यक्रम (सेक्स सॉर्टेड सीमेन);

ग) स्वदेशी नस्लों का विकास और संरक्षण

घ) कौशल विकास : पेशेवरों, एआई तकनीशियन आदि का प्रशिक्षण;

ई) किसान जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन

लक्ष्य समूह / लाभार्थी / लाभ

जाति, वर्ग और लिंग निरपेक्ष डेयरी किसान ।

(i) एनएआईपी के तहत किसानों के दरवाजे पर मुफ्त एआई सेवाएं।

(ii) एनएआईपी के तहत लगभग 1.5 करोड़ किसान लाभान्वित होंगे और किसानों की आय में तीन साल बाद सालाना रुपये 21,500 की वृद्धि होगी।

(iii) आईवीएफ तकनीक का उपयोग करते हुए त्वरित नस्ल सुधार कार्यक्रम (एबीआईपी) के तहत किसानों को 5,000 रुपये प्रति सुनिश्चित गर्भावस्था की सब्सिडी उपलब्ध है।

(iv) आईवीएफ तकनीक का उपयोग कर एबीआईपी के तहत भाग लेने वाले किसानों की आय में 3 साल बाद 60,000 रुपये प्रति वर्ष की वृद्धि होगी।

(v) सेक्स सॉर्टेड सीमेन का उपयोग करके सुनिश्चित गर्भावस्था प्राप्त करने पर किसानों को 750 रुपये की सब्सिडी।

(vi) हब एंड स्पोक मॉडल में नस्ल गुणन फार्म की स्थापना के लिए 2 करोड़ रुपये की सब्सिडी।

आवेदन करने की प्रक्रिया

क्रियान्वयन एजेंसियां योजना के दिशानिर्देशों के अनुसार प्रस्ताव तैयार करेंगी। विस्तृत परियोजना रिपोर्ट, संबंधित राज्य सरकार के माध्यम से डीएएचडी को प्रस्तुत की जानी चाहिए। केंद्रीय एजेंसियां / एन डी डी बी / आई सी ए आर सीधे डी ए एच डी को प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे। योजना के तहत निधियां पी एफ एम एस के माध्यम से सीधे क्रियान्वयन एजेंसियों के खाते में जारी की जाएंगी।

आवेदन पत्र

सभी राज्य सरकारों/संघ राज्य क्षेत्रों को सामान्य दिशानिर्देश परिचालित किए गए हैं। दिशानिर्देश वेबसाइट **https://dahd.nic.in/sites/default/filess/Operational%20guidelines_RGM.pdf** पर भी उपलब्ध हैं।

संपर्क व्यक्ति

डॉ भूषण त्यागी, संयुक्त आयुक्त,
पशुपालन और डेयरी विभाग,
कमरा नंबर 479 दूरभाष नंबर 011-23383699

विस्तृत दिशानिर्देशों के लिए विभाग की वेबसाइट **www.dahd.nic.in** को देखें या राज्य पशुपालन विभाग से संपर्क करें।

विवरण के लिए क्यू आर कोड स्कैन करें

पशुपालन और डेयरी विभाग
मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय
भारत सरकार

पशु पोषण

पशुओं के लिए अजोला ! एक सदाबहार हरा चारा

डॉ आनंद जैन, डॉ आदित्य मिश्रा, डॉ दीपिका डी. सीजर,
डॉ संजू मंडल एवं डॉ पूनम यादव

पशु शरीर क्रिया और जैव रसायन विभाग
पशु चिकित्सा और पशु पालन महाविद्यालय, जबलपुर –482001

दूध और दूध उत्पादों की बढ़ती मांग, पशुपालन व्यवसाय को लाभदायक बनाने की नयी संभावनाओं का सृजन कर रही है। ठीक इसी समय हरे चारे की उपलब्धता में निरंतर कमी परिलक्षित हो रही है। वनों एवं चारागाहों का क्षेत्रफल घट रहा है। साथ ही साथ फसल उप–उत्पादों में भी कमी आ रही है, जो अन्यथा पशु आहार के रूप में उपयोग किया जाता रहा है। इसकी पूर्ति व्यावसायिक पशु आहार से की जा रही है। इसके कारण दूध के उत्पादन लागत में वृद्धि हो रही है।

अजोला एक तैरती हुई फर्न है, जो शैवाल से मिलती–जुलती है। यह सामान्यतः उथले पानी में उगाई जाती है। यह तेजी से बढ़ती है। यह जैव उर्वरक का बहुत अच्छा स्रोत है। इस फर्न का रंग गहरा लाल या कत्थई होता है। धान के खेतों में यह अक्सर दिखाई देती है। छोटे–छोटे पोखर या तालाबों में एकत्रित पानी की सतह पर यह दिखाई देती है।

अजोला उत्पादन की विधि

मैदानी स्तर पर अजोला पिट का निर्माण एक पेड़ की छांव के नीचे 10'X5'X0.80' आकार का गड्ढा खोदकर जिसके किनारे पर ईंट रखें। गड्ढे में पन्नी बिछाकर 4.5 कि.ग्रा. गोबर की खाद में 10 लीटर पानी का घोल तैयार करें तथा इसे पालीथीन के ऊपर बिछाएं। इसमें और पानी मिलाएं जिससे यह 7 से 8 इन्च का घोल हो जाए। इसमें 1 कि.ग्रा. फ्रेश अजोला कल्चर डालें।

पौष्टिक चारा

अजोला पिट में 2 से 3 दिन में पूर्ण अजोला दिखने लगेगा। सातवें दिन से 1 से 1.5 कि.ग्रा. अजोला प्राप्त हो सकेगा। इस उपलब्ध अजोला को पशु को देने से स्वास्थ्य एवं उत्पादन में बढोतरी हो सकेगी। इसका उपयोग करके पशुपालक अपनी आय दोगुनी से भी ज्यादा कर सकते हैं।

पानी से भरे खेत (2 से 4 इंच) में 10 टन ताजा अजोला को डाल दिया जाता है। इसके साथ ही इसके ऊपर लगभग 40 कि०ग्रा० सुपर फास्फेट का छिड़काव भी कर दिया जाता है। इसकी वृद्धि के लिये 30 से 35 डिग्री

सेल्सियस का तापमान अनुकूल होता है। पानी के पोखर या लोहे के ट्रे में अजोला कल्चर बनाया जा सकता है। पानी के पोखर या लोहे के ट्रे में 5 से 7 सें.मी. पानी भर दें। उसमें 100 से 400 ग्राम कल्चर प्रतिवर्ग मीटर की दर से पानी में मिला दें। सही स्थिति रहने पर अजोला कल्चर बहुत तेज गति से बढ़ता है और 3–4 दिन में ही दुगना हो जाता है। अजोला कल्चर डालने के बाद दूसरे दिन से ही एक ट्रे या पोखर में अजोला की मोटी परत जमना शुरू हो जाती है जो नाइट्रोजन स्थिरीकरण का कार्य करती है।

अजोला के लाभ

अजोला पानी में पनपने वाले छोटे बारीक पौधों की जाति का होता है। अजोला की पंखुड़ियों में एनाबिना नामक नील हरित काई के जाति का एक सूक्ष्मजीव होता है, जो सूर्य के प्रकाश में वायुमण्डलीय नाइट्रोजन का यौगिकीकरण करता है और हरी खाद की तरह फसल को नाइट्रोजन की पूर्ति करता है। अजोला की विशेषता यह है कि अनुकूल वातावरण में 5–6 दिनों में ही इसकी पैदावार दोगुनी हो जाती है। अजोला में कई तरह के कार्बनिक पदार्थ होते हैं जो भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाते हुये अधिक पैदावार देते हैं।

अजोला जैव उर्वरक के रूप में बहुत अच्छा कार्य करता है। ये कुक्कुट, मछली और पशुओं के चारे के काम में भी आता है। इससे बायोडीजल तैयार किया जाता है। हमारे देश में तीव्र गति से बढती जनसंख्या के पोषण के लिए दूध की मांग दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। दुधारू पशुओं के पोषण तथा स्वास्थ्य रखरखाव में हरा चारा एक महत्वपूर्ण घटक है। अजोला पशुओं के लिए पौष्टिक आहार है। पशुओं को खिलाने से उनका दूध उत्पादन बढ़ जाता है। पशुओं को चारा देने से पूर्व अजोला को अच्छी तरह धोना चाहिएए क्योंकि गोबर मिला होने के कारण प्रायः पशुओं को इसकी गंध पसंद नहीं होती है।

अजोला की विशेषताएं

अजोला सस्ता, सुपाच्य, पौष्टिक व, पूरक पशु आहार है। इसे खिलाने से पशुओं के दूध में वसा व वसा रहित पदार्थ सामान्य आहार खाने वाले पशुओं की अपेक्षा अधिक पाये जाते हैं। अजोला में मुख्य रूप से 25 प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें अमीनो एसिड व विटामिन (विटामिन ए, बी–12 तथा कैरोटीन) प्रचुर मात्रा में पाये जाते है।

अजोला से पशुओं के शरीर में कई तत्वों जैसे कैल्शियम, फॉस्फोरस, लोहे की आवश्यकता की पूर्ति होती है जिससे पशुओं का शारीरिक विकास अच्छा होता है। यह गाय, भैंस, भेड़, बकरियों, मुर्गियों आदि के लिए एक आदर्श चारा सिद्ध हो रहा है। दुधारू पशुओं को यदि उनके दैनिक आहार के साथ 1.5 से 2 किग्रा. अजोला प्रतिदिन दिया जाता है तो उनके दूध उत्पादन में 15 से 20 प्रतिशत वृद्धि संभव है।

अजोला उत्पादन के दौरान ध्यान रखे

- अजोला की तेज बढ़त और दुगुना होने का न्यूनतम समय बनाये रखने हेतु यह आवश्यक हो जाता है कि अजोला को प्रतिदिन उपयोग के लिए बाहर निकाला जाये (लगभग 200 ग्राम प्रति वर्ग मीटर के मान से)।
- समय–समय पर गाय का गोबर एवं सुपर फॉस्फेट डालते रहना चाहिए ताकि फर्न तीव्र गति से विकसित होता रहे ।
- प्रति 10 दिनों के अंतराल में एक बार अजोला तैयार करने की टंकी से 25–30 प्रतिशत पानी, ताजे पानी से बदल देना चाहिए ताकि नाइट्रोजन की अधिकता होने से बचाया जा सके ।
- प्रति 6 माह के अंतराल में, एक बार, अजोला तैयार करने की टंकी को पूरी तरह से खाली कर साफ करना चाहिए तथा नए सिरे से पानी, गोबर एवं 'अजोला कल्चर' डालना चाहिए।
- अजोला का उपयोग करने से पहले ताजे, साफ पानी से अच्छे से धोना चाहिए ताकि गोबर की गंध निकल जाये। ■

('पशुधन प्रहरी' से सभार)

'दुग्ध सरिता' के सदस्य बनें
घर बैठे पत्रिका पाएं

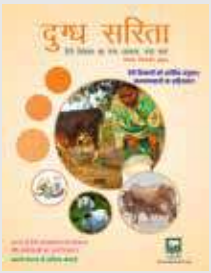

इंडियन डेरी एसोसिएशन
का प्रकाशन

दुग्ध सरिता
(द्विमासिक पत्रिका)
अंकों की संख्या : 6
वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 450/–
कीमत रु. 75/– प्रति अंक
साधारण डाक से निःशुल्क डिलीवरी, कोरियर या रजिस्टर्ड डाक का शुल्क रु. 40/– प्रति अंक

दुग्ध सरिता : देश में डेरी सेक्टर का विकास आईडीए का मिशन है और इसके लिए हिंदी भाषा में डेरी किसानों को लक्ष्य करते हुए इस द्विमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया है। यह पत्रिका डेरी सेक्टर के सभी संबंधितों की एक बड़ी मांग और जरूरत पूरी करती है। 'दुग्ध सरिता' डेरी किसानों की समस्याओं और मुद्दों पर केंद्रित है और संबंधित सरकारी योजनाओं की जानकारी भी प्रदान करती है।

'दुग्ध सरिता' की 4,000 या अधिक प्रतियां प्रकाशित की जा रही हैं। इसे सहकारी समितियों और निजी डेरी सेक्टर के संस्थागत सदस्यों सहित आईडीए के सभी सदस्यों, शैक्षणिक संस्थानों और सभी संबंधित सरकारी विभागों को प्रेषित किया जा रहा है। इसके माध्यम से नई तकनीकों, सर्वोत्तम दूध प्रक्रियाओं, डेरी प्रसंस्करण और आधिक दूध उत्पादन सहित सभी पहलुओं पर जानकारी प्रदान की जा रही है। 'दुग्ध सरिता' में लेख, समाचार व विचार, केस स्टडीज, सफलता गाथाएं, फोटो फीचर तथा अन्य उपयोगी सामग्री प्रकाशित की जाएगी। इसका उद्देश्य डेरी पशुओं के पालन से लेकर दूध उत्पादन, परिवहन, प्रसंस्करण तथा बिक्री के सभी आयामों को शामिल करते हुए डेरी किसानों और डेरी व्यवसाय को प्रगति तथा उन्नति के पथ पर अग्रसर करना है।

आईडीए द्वारा 'इंडियन डेरीमैन' और 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' नामक दो अन्य पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया जाता है, जो राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं।

सदस्यता फार्म

हाँ, मैं सदस्य बनना चाहता हूं :

दुग्ध सरिता विवरण...../एक वर्ष/दो वर्ष/ तीन वर्ष/ प्रतियों की संख्या ☐
(कृपया 'टिक' करें)

पत्रिका भेजने का पता (अंग्रेजी में लिखें तो कैपिटल लैटर प्रयोग करें)

संस्थान / व्यक्ति का नाम.....

संपर्क व्यक्ति का नाम व पदनाम (संस्थान सदस्यता के लिए).....

पता.....

शहर.....

राज्य.....पिन कोड.....ई–मेल.....

फोन.....मोबाइल.....

संलग्न बैंक ड्राफ्ट/स्थानीय चेक (ऐट पार) नं.....

बैंक.....इंडियन डेरी एसोसिएशन, नई दिल्ली को देय

एनईएफटी विवरण (ट्रांसैक्शन आईडी.....तारीख.....राशि.....)

(हस्ताक्षर)

कृपया इस फॉर्म को भरकर डाक से भेजें या ई–मेल करें।

सेक्रेटरी (ऐस्टेबलिशमेंट), इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सेक्टर–IV आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022

फोन : 26179781, 26170781 ईमेल : **dsarita.ida@gmail.com** वेबसाइट : **www.indairyasso.org**

एनईएफटी विवरण : खाता नाम : इंडियन डेरी एसोसिएशन बचत खाता संख्या : 90562170000024 आईएफएससी : **CNRB0019009**
बैंक : केनरा बैंक ; शाखा; दिल्ली तमिल संगम बिल्डिंग, सेक्टर V आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022

किसान दिवस एवं नस्ल संरक्षण वितरण समारोह

करनाल, 23 दिसम्बर। 'भाकृअनुप–राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो', करनाल द्वारा पालतू पशुओं की देशी नस्लों को पालने एवं उनका संरक्षण करने वाले किसानों एवं संस्थाओं को संस्थान में आयोजित "किसान दिवस एवं नस्ल संरक्षण वितरण समारोह" के अवसर पर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. बी पी मिश्रा ने अतिथियों का स्वागत किया एवं देशी नस्लों के संरक्षण एवं ऐसे कार्यक्रमों के महत्त्व पर जोर दिया, उन्होंने बताया कि आज का दिन किसानों के लिए समर्पित है। डॉ. ए के मिश्र, प्रधान वैज्ञानिक ने कार्यक्रम की रूपरेखा बतायी। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ बी एन त्रिपाठी, उप महानिदेशक (पशु विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी पशुपालकों एवं विजेता संस्थाओं को बधाई दी तथा देशी पालतू पशु नस्लों की विशेषता, उनकी आवश्यकता, ब्रीडिंग एवं संरक्षण पर बल दिया एवं इस तरह के कार्यक्रमों की आवश्यकता पर जोर दिया। इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि डॉ ए के श्रीवास्तव, कुलपति, पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा वि.वि., मथुरा ने देशी पशु धन नस्लों को देश की धरोहर बताया एवं उनके संरक्षण के महत्व पर भी प्रकाश डाला। डॉ. धीर सिंह, निदेशक राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान ने विजेताओं को बधाई दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ सोनिका अहलावत ने किया।

इस अवसर पर व्यक्तिगत श्रेणी के अंतर्गत चिप्पीपराई श्वान पालने वाले तमिलनाडु के श्री ए सतीश को प्रथम, महाराष्ट्र के श्री शेष राव तुकाराम सूर्यवंशी को देवनी नस्ल की गाय के संरक्षण हेतु द्वितीय, आंध्र प्रदेश के श्री श्रीनिवासआचार्या यू के को मांड्या भेड़ हेतु तृतीय

तथा राजस्थान के श्री दुर्गा राम को प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

संस्थागत श्रेणी के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार गुरू अंगद देव पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, लुधियाना (पंजाब) को नीली रावी भैंस की एवं भाकृअनुप – भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसन्धान संस्थान, झाँसी (उत्तर प्रदेश) को भदावरी भैंस के संरक्षण के लिए द्वितीय स्थान, जमुना पारी बकरी के लिए भाकृअनुप–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मथुरा एवं मालपुरा भेड़ के संरक्षण के लिए केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर, राजस्थान को एवं तृतीय स्थान आणंद कृषि विश्वविद्यालय को अंकलेश्वर नस्ल की मुर्गियों के संरक्षण एवं श्वानीय अनुसंधान एवं सूचना केंद्र, मुधोल, बागलकोट, कर्नाटक को मुधोल हाउंड श्वान नस्ल के संरक्षण के लिए मिला एवं प्रोत्साहन पुरस्कार पशुधन अनुसंधान स्टेशन, पालमनेर, श्री वेंकेटश्वरा पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय, तिरूपति, आंध्र प्रदेश को पुन्गानूर नस्ल के संरक्षण एवं कच्छ ऊंट उचेरक मालधारी संगठन, कच्छ, गुजरात को खराई नस्ल के ऊंटों के संरक्षण के लिए प्रदान किया गया। ■

परिचय

Pradeshik Cooperative Dairy Federation
प्रादेशिक कोऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन (पराग), उत्तर प्रदेश

प्रादेशिक कोऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन (पराग), उत्तर प्रदेश (पी०सी०डी०एफ०) की स्थापना राज्य में सहकारिता आधारित संगठित दुग्ध व्यवसाय के उद्देश्य से वर्ष 1962 में की गई थी। पी०सी०डी०एफ० एक ऐसा संगठन है, जिसने दुग्ध व्यवसाय में वर्षों से दुग्ध उत्पादकों का शोषण करते आ रहे दूधियों के शोषण से मुक्त कराया है। इसमें दुग्ध उत्पादक और उपभोक्ता के बीच सीधा सम्पर्क स्थापित हुआ। यह प्रदेश स्तरीय शीर्षस्थ सहकारी संस्था उत्पादकों की सहभागिता से शक्ति प्राप्त करती है और उन्हें व्यावसायिक कौशल व पारम्परिक स्वरूप में गतिशील व्यवसायिकता प्रदान करता है।

पिछले कुछ वर्षों में पी०सी०डी०एफ० ने स्वयं को नए आयामों में, नए क्षेत्रों में विविधतापूर्वक विस्तारित किया है। आज दिल्ली में दुग्ध आपूर्ति करने हेतु राष्ट्रीय मिल्क ग्रिड में मदर डेरी को दुग्ध उपलब्ध कराने में पी०सी०डी०एफ० का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

पी०सी०डी०एफ० का योगदान केवल आंकड़ों से परिभाषित नहीं किया जा सकता है। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इससे जुड़े दुग्ध उत्पादक धीरे–धीरे समृद्धशाली भविष्य की ओर अग्रसर हो रहे हैं और वर्षों से दुग्ध उपभोक्ताओं का विश्वास पराग में बना हुआ है। इसी परिप्रेक्ष्य में पी०सी०डी०एफ० की सफलता आकलित की जानी चाहिए।

मिशन

राज्य के अधिक से अधिक राजस्व गांवों को सहकारिता के दायरे में लाना। ग्राम डेयरी सहकारिताओं के माध्यम से राज्य में उत्पादित अधिकतम विपणन योग्य अधिशेष दूध की खरीद करना। ग्रामीण आबादी का सामाजिक और आर्थिक उत्थान। किसान को दुग्ध मूल्य भुगतान में पारदर्शिता। डेयरी सहकारिताओं को आत्मनिर्भर बनाना। शहरी उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण दूध और दुग्ध उत्पाद उपलब्ध कराने के लिए पर्याप्त विपणन ढांचा तैयार करना।

विजन

दुग्ध उत्पादकों से स्थायी रूप से खरीद करते हुए, निष्पक्ष व्यापार नीतियों को प्रोत्साहित करना और हमारे उपभोक्ताओं को उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद प्रदान करते हुए हमारे राष्ट्रीय विस्तार को गति देना। ■

समारोह

कृषि विज्ञान केन्द्र-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्ज़तनगर का 37वां स्थापना दिवस

दिनांक 20 दिसंबर, 2022 को कृषि विज्ञान केन्द्र भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान ने अपना 37वां स्थापना दिवस मोहम्मदपुर ठाकुरन ग्राम से आए हुए कृषकों व कृषक महिलाओं के साथ मनाया। गत 37 वर्षों से कृषि विज्ञान केन्द्र, बरेली ने बरेली के लगभग सभी ग्रामीण क्षेत्रों में अपने तकनीकी प्रदर्शन, मेले, गोष्ठियां व ग्रामीण अंचलीय प्रशिक्षण का आयोजन किया है और कृषकों को जागरूक करते हुए उन्हें उन्नत तकनीक से जोड़ा है।

इस अवसर पर संयुक्त निदेशक, प्रसार शिक्षा, डॉ महेश चन्द्र जी ने कृषि विज्ञान केन्द्र के सभी कृषि वैज्ञानिकों को शुभकामनाएं दीं और कृषकों को इस केन्द्र द्वारा किया जाने वाले कार्यों का उल्लेख किया। संयुक्त निदेशक ने युवकों और ग्रामीण महिलाओं को कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा आयोजित होने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों में प्रतिभागिता करने हेतु आग्रह किया। कार्यक्रम में श्रीमती वाणी यादव ने कृषकों, महिला कृषकों, ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को कृषि विज्ञान केन्द्र से मिलने वाले तकनीकी जानकारियों के संबंध में विस्तार से बताया। कृषि विज्ञान केन्द्र, बरेली अध्यक्ष डॉ. बी पी सिंह ने कृषकों को कृषि की सभी इकाईयों के प्रशिक्षण ग्रहण करने का आग्रह किया। ■

कहानी

परदा

— यशपाल

चौधरी पीरबख्श के दादा चुंगी के महकमे में दारोगा थे। आमदनी अच्छी थी। एक छोटा, पर पक्का मकान भी उन्होंने बनवा लिया। लड़कों को पूरी तालीम दी। दोनों लड़के एण्ट्रेन्स पास कर रेलवे में और डाकखाने में बाबू हो गये। चौधरी साहब की जिन्दगी में लडकों के ब्याह और बाल–बच्चे भी हुए, लेकिन ओहदे में खास तरक्की न हुई। वही तीस और चालीस रुपये माहवार का दर्जा। अपने जमाने की याद कर चौधरी साहब कहते–"वो भी क्या वक्त थे! लोग मिडिल पास कर डिप्टी–कलेक्टरी करते थे और आजकल की तालीम है कि एण्ट्रेन्स तक अंग्रेजी पढ़कर लड़के तीस–चालीस से आगे नहीं बढ़ पाते।" बेटों को ऊँचे ओहदों पर देखने का अरमान लिये ही उन्होंने आँखें मूंद लीं। इंशा अल्ला, चौधरी साहब के कुनबे में बरक्कत हुई। चौधरी फजल कुरबान रेलवे में काम करते थे।

अल्लाह ने उन्हें चार बेटे और तीन–बेटियां दीं। चौधरी इलाही बख्श डाकखाने में थे। उन्हें भी अल्लाह ने चार बेटे और दो लड़कियाँ बख्शीं। चौधरी–खानदान अपने मकान को हवेली पुकारता था। नाम बड़ा देने पर जगह तंग ही रही। दारोगा साहब के जमाने में जनाना भीतर था और बाहर बैठक में वे मोढ़े पर बैठ नैचा गुड़गुड़ाया करते। जगह की तंगी की वजह से उनके बाद बैठक भी जनाने में शामिल हो गयी और घर की ड्योढ़ी पर परदा लटक गया। बैठक न रहने पर भी घर की इज्जत का ख्याल था, इसलिए पर्दा बोरी के टाट का नहीं, हीं बढ़िया किस्म का रहता। जाहिर है, दोनों भाइयों के बाल–बच्चे एक ही मकान में रहने पर भी भीतर सब अलग–अलग था। ड्योढ़ी का पर्दा कौन भाई लाये? इस समस्या का हल इस तरह हुआ कि दारोगा साहब के जमाने की पलंग की रंगीन दरियाँ एक के बाद एक ड्योढ़ी में लटकाई जाने लगीं। तीसरी पीढ़ी के ब्याह–शादी होने लगे। आखिर चौधरी–खानदान की औलाद को हवेली छोड़ दूसरी जगहें तलाश करनी पड़ीं। चौधरी इलाही बख्श के बड़े साहबजादे एण्ट्रेन्स पास कर डाकखाने में बीस रुपये की क्लर्की पा गये। दूसरे साहबजादे मिडिल पास कर अस्पताल में कम्पाउण्डर बन गये। ज्यों–ज्यों जमाना गुजरता जाता, तालीम और नौकरी दोनों मुश्किल होती जातीं तीसरे बेटे होनहार थे। उन्होंने वजीफा पाया। जैसे–तैसे मिडिल कर स्कूल में मुदर्रिस हो देहात चले गये। चौथे लड़के पीरबख्श प्राइमरी से आगे न बढ़ सके। आजकल की तालीम माँ–बाप पर खर्च के बोझ के सिवा और है क्या? स्कूल की फीस हर महीने, और किताबों, कापियों और नक्शों के लिए रुपये–ही–रुपये! चौधरी पीरबख्श का भी ब्याह हो गया मौला के करम से बीबी की गोद भी जल्दी ही भरी। पीरबख्श ने रोजगार के तौर पर खानदान की इज्जत के ख्याल से एक तेल की मिल में मुंशीगिरी कर ली।

तालीम ज्यादा नहीं तो क्या, सफेदपोश खानदान की इज्जत का पास तो था। मजदूरी और दस्तकारी उनके करने की चीजें न थीं। चौकी पर बैठते। कलम–दवात का काम था। बारह रुपया महीना अधिक नहीं होता। चौधरी पीरबख्श को मकान सितवा की कच्ची बस्ती में लेना पड़ा। मकान का किराया दो रुपया था। आसपास गरीब और कमीने लोगों की बस्ती थी। कच्ची गली के बीचों–बीच, गली के मुहाने पर लगे कमेटी के नल से टपकते पानी की काली धार बहती रहती, जिसके किनारे घास उग आयी थी। नाली पर मच्छरों

और मक्खियों के बादल उमड़ते रहते। सामने रमजानी धोबी की भट्ठी थी, जिसमें से धुंआं और सज्जी मिले उबलते कपड़ों की गंध उड़ती रहती। दायीं ओर बीकानेरी मोचियों के घर थे। बायीं ओर वर्कशाप में काम करने वाले कुली रहते। इस सारी बस्ती में चौधरी पीरबख्श ही पढ़े–लिखे सफेदपोश थे। सिर्फ उनके ही घर की ड्योढ़ी पर पर्दा था। सब लोग उन्हें चौधरीजी, मुंशीजी कहकर सलाम करते। उनके घर की औरतों को कभी किसी ने गली में नहीं देखा। लड़कियाँ चार–पाँच बरस तक किसी काम–काज से बाहर निकलतीं और फिर घर की आबरू के ख्याल से उनका बाहर निकलना मुनासिब न था। पीरबख्श खुद ही मुस्कुराते हुए सुबह–शाम कमेटी के नल से घड़े भर लाते। चौधरी की तनख्वाह पद्रह बरस में बारह से अठारह हो गयी। खुदा की बरक्कत होती है, तो रुपये–पैसे की शक्ल में नहीं, आल–औलाद की शक्ल में होती है। पंद्रह बरस में पाँच बच्चे हुए। पहले तीन लड़कियाँ और बाद में दो लड़के। दूसरी लड़की होने को थी तो पीरबख्श की वाल्दा मदद के लिए आयीं। वालिद साहब का इंतकाल हो चुका था। दूसरा कोई भाई वाल्दा की फिक्र करने आया नहीं। वे छोटे लड़के के यहाँ ही रहने लगीं।

जहाँ बाल–बच्चे और घर–बार होता है, सौ किस्म की झंझटें होती ही हैं। कभी बच्चे को तकलीफ है, तो कभी जच्चा को। ऐसे वक्त में कर्ज की जरूरत कैसे न हो? घर–बार हो, तो कर्ज भी होगा ही। मिल की नौकरी का कायदा पक्का होता है। हर महीने की सात तारीख को गिनकर तनख्वाह मिल जाती है। पेशगी से मालिक को चिढ़ है। कभी बहुत जरूरत पर ही मेहरबानी करते। जरूरत पड़ने पर चौधरी घर की कोई छोटी–मोटी चीज गिरवी रख कर उधार ले आते। गिरवी रखने से रुपये के बारह आने ही मिलते। ब्याज मिलाकर सोलह आने हो जाते और फिर चीज के घर लौट आने की सम्भावना न रहती। मुहल्ले में चौधरी पीरबख्श की इज्जत थी। इज्जत का आधार था, घर के दरवाजे पर लटका पर्दा। भीतर जो हो, पर्दा सलामत रहता। कभी बच्चों की खींच–खाँच या बेदर्द हवा के झोंकों से उसमें छेद हो जाते, तो परदे की आड़ से हाथ सुई–धागा ले उसकी मरम्मत कर देते। दिनों का खेल! मकान की ड्योढ़ी के किवाड़ गलते–गलते बिलकुल गल गये। कई दफे कसे जाने से पेच टूट गये और सुराख ढीले पड़ गये। मकान मालिक सुरजू पांडे को उसकी फिक्र न थी। चौधरी कभी जाकर कहते–सुनते तो उत्तर मिलता––"कौन बड़ी रकम थमा देते हो? दो रुपल्ली किराया और वह भी छः–छः महीने का बकाया। जानते हो लकड़ी का क्या भाव है। न हो मकान छोड़ जाओ।" आखिर किवाड़ गिर गये। रात में चौधरी उन्हें जैसे–तैसे चौखट से टिका देते। रात–भर दहशत रहती कि कहीं कोई चोर न आ जाये। मुहल्ले में सफेदपोशी और इज्जत होने पर भी चोर के लिए घर में कुछ न था। शायद एक भी साबित कपड़ा या बरतन ले जाने के लिए चोर को न मिलता। पर चोर तो चोर है। छिनने के लिए कुछ न हो, तो भी चोर का डर तो होता ही है। वह चोर जो ठहरा! चोर से ज्यादा फिक्र थी आबरू की। किवाड़ न रहने पर पर्दा ही आबरू का रखवारा था। वह परदा भी तारतार होते–होते एक रात आँधी में किसी भी हालत में लटकने लायक न रह गया। दूसरे दिन घर की एकमात्र पुश्तैनी चीज दरी दरवाजे पर लटक गयी। मुहल्लेवालों ने देखा और चौधरी को सलाह दी–'अरे चौधरी, इस जमाने में दरी यों काहे खराब करोगे? बाजार से ला टाट का टुकडा न लटका दो! पीरबख्श टाट की कीमत भी आते– जाते कई दफे पूछ चुके थे। दो गज टाट आठ आने से कम में न मिल सकता था। हँसकर बोले–"होने दो क्या है? हमारे यहाँ पक्की हवेली में भी ड्योढ़ी पर दरी का ही पर्दा रहता था।" कपड़े की महँगाई के इस जमाने में घर की पाँचों औरतों के शरीर से कपड़े जीर्ण होकर यों गिर रहे थे, जैसे पेड़ अपनी छाल बदलते हैं। पर चौधरी साहब की आमदनी से दिन में एक दफे किसी तरह पेट भर सकने के लिए आटा के अलावा कपड़े की गुंजाइश कहाँ? खुद उन्हें नौकरी पर जाना होता। पायजा में जब पैबन्द सँभालने की ताब न रही,

मारकीन का एक कुर्ता–पायजामा जरूरी हो गया, पर लाचार थे। गिरवी रखने के लिए घर में जब कुछ भी न हो, गरीब का एक मात्र सहायक है पंजाबी खान। रहने की जगह–भर देखकर वह रुपया उधार दे सकता है। दस महीने पहले गोद के लड़के बर्कत के जन्म के समय पीरबख्श को रुपये की जरूर आ पड़ी। कहीं और कोई प्रबन्ध न हो सकने के कारण उन्होंने पंजाबी खान बबर अलीखाँ से चार रुपये उधार ले लिये थे। बबर अलीखाँ का रोजगार सितवा के उस कच्चे मुहल्ले में अच्छा–खासा चलता था। बीकानेरी मोची, वर्कशाप के मजदूर और कभी–कभी रमजानी धोबी सभी बबर मियाँ से कर्ज लेते रहते। कई दफे चौधरी परीबख्श ने बबर अली को कर्ज और सूद की किश्त न मिलने पर अपने हाथ के डंडे से ऋणी का दरवाजा पीटते देखा था। उन्हें साहूकार और ऋणी में बीच–बचौवल भी करना पड़ा था। खान को वे शैतान समझते थे, लेकिन लाचार हो जाने पर उसी की शरण लेनी पड़ी। चार आना रुपया महीने पर चार रुपया कर्ज लिया। शरीफ खानदानी, मुसलमान भाई का ख्याल कर बबर अली ने एक रुपया माहवार की किश्त मान ली। आठ महीने में 'कर्ज अदा होना तय हुआ। खान की किश्त न दे सकने की हालत में अपने घर के दरवाजे पर फजीहत हो जाने की बात का ख्याल कर चौधरी के रोएँ खड़े हो जाते। सात महीने फाका करके भी वे किसी तरह से किश्त देते चले गये। लेकिन जब सावन में बरसात पिछड़ गयी और बाजरा भी रुपये का तीन सेर मिलने लगा,किश्त देना संभव न रहा। खान सात तारीख की शाम को ही आया। चौधरी परीबख्श ने खान की दाढ़ी छू और अल्ला की कसम खा एक महीने की मुआफी चाही। अगले महीने एक का सवा देने का वायदा किया। खान टल गया। भादों में हालत और भी परेशानी की हो गयी। बच्चों की माँ की तबीयत रोज–रोज गिरती जा रही थी। खाया–पिया उसके पेट में न ठहरता। पथ्य के लिए उसको गेहूँ की रोटी देना जरूरी हो गया। गेहूँ मुश्किल से रुपये का सिर्फ ढाई सेर मिलता। बीमार का जी ठहरा, कभी प्याज के टुकड़े या धनिये की खुशबू के लिए ही मचल जाता। सौंफ, अजवायन, काले नमक की ही जरूरत हो, तो पैसे की कोई चीज मिलती ही नहीं। बाजार में ताँब का नाम ही नहीं रह गया। नाहक इकन्नी निकल जाती है। चौधरी को दो रुपये महंगाई–भत्ते के मिले, पर पेशगी लेते–लेते तनख्वाह के दिन केवल चार ही रुपये हिसाब में निकले। बच्चे पिछले हफ्ते लगभग फाके–से थे। चौधरी कभी गली से दो पैसे की चौराई खरीद लाते, कभी बाजरा उबाल सब लोग कटोरा–कटोरा–भर पी लेते। बड़ी कठिनता से मिले चार रुपयों में से सवा रुपया खान के हाथ में धर देने की हिम्मत चौधरी को न हुई। मिल से घर लौटते समय वे मंडी की ओर टहल गये। दो घंटे बाद जब समझा, खान टल गया होगा और अनाज की गठरी ले वे घर पहुंचे। खान के भय से दिल डूब रहा था, लेकिन दूसरी ओर चार भूखे बच्चों, उनकी माँ, दूध न उतर सकने के कारण सूखकर काँटा हो रहे गोद के बच्चे और चलने–फिरने से लाचार अपनी जईफ माँ की भूख से बिलबिलाती सूरतें आखों के सामने नाच जातीं। धड़कते हुए हृदय से वे कहते जाते–"मौला सब देखता है, खैर करेगा।" सात तारीख की शाम को असफल हो खान आठ की सुबह तड़के चौधरी के मिल चले जाने से पहले ही अपना डंडा हाथ में लिये दरवाजे पर मौजूद हुआ। रात–भर सोच–सोचकर चौधरी ने खान के लिए बयान तैयार किया। मिल के मालिक लालाजी चार रोज के लिए बाहर गये हैं। उनके दस्तखत के बिना किसी को भी तनख्वाह नहीं मिल सकी। तनख्वाह मिलते ही वह सवा रुपया हाजिर करेगा। माकूल वजह बताने पर भी खान बहुत देर तक गुर्राता रहा–"अम वतन चोड़ के परदेस में पड़ा है–ऐसे रुपिया चोड़ देने के वास्ते अम यहाँ नहीं आया है, अमारा भी बाल–बच्चा है। चार रोज में रुपिया नई देगा, तो अब तुमारा.... कर देगा।" पाँचवें दिन रुपया कहाँ से आ जाता! तनख्वाह मिले अभी हफ्ता भी नहीं हुआ। मालिक ने पेशगी देने से साफ इनकार कर दिया। छठे दिन किस्मत से इतवार था। मिल में छुट्टी रहने पर भी चौधरी खान के डर

से सुबह ही बाहर निकल गये। जान–पहचान के कई आदमियों के यहाँ गये। इधर–उधर की बातचीत कर वे कहते––''अरे भाई, हो तो बीस आने पैसे तो दो–एक रोज के लिए देना। ऐसे ही जरूरत आ पड़ी है। ''उत्तर मिला–''मियाँ, पैसे कहाँ इस जमाने में! पैसे का मोल कौड़ी नहीं रह गया। हाथ में आने से पहले ही उधार में उठ गया तमाम!'' दोपहर हो गयी। खान आया भी होगा, तो इस वक्त तक बैठा नहीं रहेगा–चौधरी ने सोचा, और घर की तरफ चल दिये। घर पहुँचने पर सुना खान आया था और घण्टे–भर तक ड्योढ़ी पर लटके दरी के परदे को डंडे से ठेलठेलकर गाली देता रहा है! परदे की आड़ से बड़ी बीबी के बार–बार खुदा की कसम खा यकीन दिलाने पर कि चौधरी बाहर गये हैं, रुपया लेने गये हैं, खान गाली देकर कहता–''नई, बदजात चोर बीतर में चिपा है! अम चार घंटे में पिर आता है। रुपिया लेकर जायेगा।रुपिया नई देगा, तो उसका खाल उतारकर बाजार में बेच देगा।...हमारा रुपिया क्या अराम का है? '' चार घंटे से पहले ही खान की पुकार सुनाई दी––''चौदरी! '' पीरबख्श के शरीर में बिजली–सी दौड़ गयी और वे बिलकुल निस्सत्त्व हो गये, हाथ–पैर सुन्न और गला खुश्क। गाली दे परदे को ठेलकर खान के दुबारा पुकारने पर चौधरी का शरीर–निर्जीवप्राय होने पर भी निश्चेष्ट न रह सका। वे उठकर बाहर आ गये। खान आग–बबूला हो रहा था––''पैसा नहीं देने का वास्ते चिपता है!.... ''एक–से–एक बढ़ती हुई तीन गालियाँ एक–साथ खान के मुँह से पीरबख्श के पुरखों पीरों के नाम निकल गयीं। इस भयंकर आघात से परीबख्श का खानदानी रक्त भड़क उठने के बजाय और भी निर्जीव हो गया। खान के घुटने छू, अपनी मुसीबत बता वे मुआफी के लिए खुशामद करने लगे। खान की तेजी बढ़ गयी। उसके ऊँचे स्वर से पड़ोस के मोची और मजदूर चौधरी के दरवाजे के सामने इकट्ठे हो गये। खान क्रोध में डंडा फटकारकर कह रहा था––''पैसा नहीं देना था, लिया क्यों? क्यों तनख्वाह किदर में जाता ? अरामी अमारा पैसा मारेगा। अम तुमारा खाल खींच लेगा। पैसा नई है, तो घर पर परदा लटका के शरीफजादा कैसे बनता?.. .तुम अमको बीबी का गैना दो, बर्तन दो, कुछ तो भी दो, अम ऐसे नई जायेगा। '' बिलकुल बेबस और लाचारी में दोनों हाथ उठा खुदा से खान के लिए दुआ माँग पीरबख्श ने कसम खायी, एक पैसा भी घर में नहीं, बर्तन भी नहीं, कपड़ा भी नहीं, खान चाहे तो बेशक उसकी खाल उतारकर बेच ले। खान और आग हो गया–''अम तुमारा दुआ क्या करेगा? तुमारा खाल क्या करेगा? उसका तो जूता भी नई बनेगा। तुमारा खाल से तो यह टाट अच्चा।'' खान ने ड्योढ़ी पर लटका दरी का पर्दा झटक लिया। ड्योढी से परदा हटने के साथ ही, जैसे चौधरी के जीवन की डोर टूट गयी। वह डगमगाकर जमीन पर गिर पड़े।

इस दृश्य को देख सकने की ताब चौधरी में न थी, परन्तु द्वार पर खड़ी भीड़ ने देखा–घर की लड़कियाँ और औरतें परदे के दूसरी ओर घटती घटना के आतंक से आंगन के बीचों बीच इकट्ठी हो खड़ी काँप रहीं थीं। सहसा परदा हट जाने से औरतें ऐसे सिकुड़ गयीं, जैसे उनके शरीर का वस्त्र खींच लिया गया हो। वह परदा ही तो घर–भर की औरतों के शरीर का वस्त्र था। उनके शरीर पर बचे चीथड़े उनके एक–तिहाई अंग ढंकने में भी असमर्थ थे! जाहिल भीड़ ने घृणा और शरम से आँखें फेर लीं। उस नग्नता की झलक से खान की कठोरता भी पिघल गयी। ग्लानि से थूक, परदे को आंगन में वापिस फेंक, क्रुद्ध निराशा में उसने ''लाहौल बिला...!'' कहा और असफल लौट गया। भय से चीखकर ओट में हो जाने के लिए भागती हुई औरतों पर दया कर भीड़ छँट गयी। चौधरी बेसुध पड़े थे। जब उन्हें होश आया, ड्योढ़ी का परदा आंगन में सामने पड़ा था। परन्तु उसे उठाकर फिर से लटका देने का सामर्थ्य उनमें शेष न था। शायद अब इसकी आवश्यकता भी न रही थी। परदा जिस भावना का अवलम्ब था, वह मर चुकी थी। ■

दुग्ध सरिता में विज्ञापन दें, लाभ बढ़ाएं

RATE CARD — DUGDH SARITA

Position	Rate per insertion	Inaugural Offer
	Rs.	Rs.
Back Cover (Four Colours)*	18,000	12,000
Inside Front Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Back Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Right Page (Four Colours)	10,800	7,000
Inside Left Page (Four Colours)	9,600	6,000
Facing Spread (Four Colours)	16,800	11,000
Half Page (Four Colours)	5400	4000

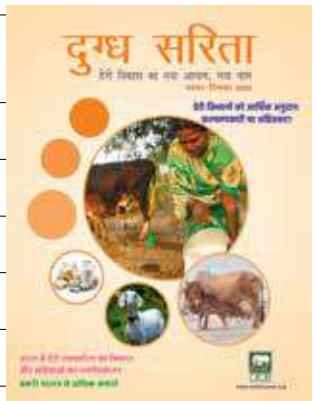

* Fifth colour: extra charges will be levied. **Note: GST 5% will be applicable on the above tariff.**

TECHNICAL DETAILS

Magazine Size in cm — **Height :** 26.5 cm; **Width:** 20.5 cm

Please leave 1 cm space from all side i.e. top-bottom-left and right. For bleed size artwork, please provide 1 cm bleed from all side over and above given size of the magazine.

Terms and Conditions

- Indian Dairy Association reserves the exclusive right to reject any advertisement, whether or not the same has already been acknowledged and/or previously published.
- The advertisement material should reach the IDA House on or before the informed deadline date.
- Cancellation of advertisements is not accepted after the booking deadline has expired.
- The Association will not be liable for any error in the advertisement.
- The Association reserves the right to destroy all material after a period of 45 days from the date of issue of the last advertisement.

Artwork

The ad material may be sent through email on the ID: **ida.adv@gmail.com** in PDF & JPG **OR** CDR & JPG format only. All four colour scan should be saved as CMYK not RGB. Processing charges would be borne by the advertiser as per actuals.

Mode of Payment

100% Advance. Payment should be made through Bank Draft payable at New Delhi / Cheque payable at par / NEFT in favour of the "Indian Dairy Association" along with the Release Order. Bank details are as follows: ***Name:*** *Indian Dairy Association;* ***SB a/c No:*** *90562170000024;* ***IFSC:*** *CNRB0019009;* ***Bank:*** *Canara Bank;* ***Branch Address:*** *Delhi Tamil Sangam Building, Sector – V, R.K. Puram New Delhi.*

Contact for Ads

Mr. Narendra Kumar Pandey

Sr. Executive-Publications. Ph. (Direct): 011-26179783 M.: 9891147083

Indian Dairy Association

IDA House, Sector-IV, R.K. Puram, New Delhi-110 022

Ph.: 91-11-26165355, 26170781, 26165237

E-mail: ida.adv@gmail.com Web: www.indairyasso.org

जेम फर्टिकिट

बांझपन से प्रजनन क्षमता तक

सुनिश्चित करता है

अधिकत्तम

दूग्ध उत्पादन प्रत्येक ब्यांत में

एवं हर साल एक बछड़ा / बछिया

आयुर्वेट लिमिटेड

कॉरपोरेट कार्यालय: यूनिट नं. 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टावर, प्लाट नं. एच-3, सेक्टर-14, कौशांबी, गाजियाबाद-201010 (उ.प्र.)
दूरभाष: +91-120-7100201 फैक्स: +91-120-7100202
ई-मेल: customercare@ayurvet.com वेब: www.ayurvet.com
सीआईएन सं.: U74899DL1992PLC050567

रजिस्टर्ड ऑफिस: चौथी मंजिल, सागर प्लाज़ा, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092

पारंपरिक ज्ञान
आधुनिक अनुसंधान

Amul
The Taste of India

अमूल दूध
पीता है इंडिया

अमूल
दूध

एशिया का सबसे बड़ा मिल्क ब्रांड

खुला दूध सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है. अमूल आपके लिए लाते हैं पाश्चराइज़्ड पाउच दूध.
यह शुद्ध और विटामिन्स से भरपूर होता है. इसे अत्याधुनिक मशीनों की मदद से पैक किया जाता है,
इसलिए यह इंसानी हाथों से अनछुआ रहता है. अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें 011-28524336/37.

Follow us: /amul.coop | /amul_coop | /amultv | /amul_india | Visit us at http://www.amul.com

11430665HIN

प्रकाशक व मुद्रक ज्ञान प्रकाश वर्मा द्वारा, इंडियन डेयरी एसोसिएशन के लिए रॉयल आफसेट,
ए–89/1, फेज–1, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित व इंडियन डेयरी एसोसिएशन,
आईडीए हाऊस, सेक्टर–4, आर. के. पुरम, नई दिल्ली – 110022 से प्रकाशित, सम्पादक – जगदीप सक्सेना